दैनिक
बिहार पत्रिका
सच के साथ

पटना से प्रकाशित
अंक: 260
वर्ष : 06
मूल्य : 02
पृष्ठ : 06

रविवार, 20 अप्रैल 2025
दैनिक हिन्दी डिजिटल अखबार
web_dainikbiharpatrika.com

सुविचार

किसी भी व्यक्ति की इच्छाशक्ति और उसका दृढ़संकल्प उसको एक गरीब से राजा बना सकती है।

पंडित नेहरू ने सत्ता नहीं बल्कि सत्य को खोजा : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता एवं लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने शनिवार को अपनी राजनीतिक यात्रा के पीछे की गहरी प्रेरणाओं के बारे में खुलकर बात की और पूर्व प्रधानमंत्री एवं अपने परदादा पंडित जवाहरलाल नेहरू से प्रेरणा लेने की बात कही। यह बातचीत पूर्व सांसद संदीप दीक्षित के साथ पॉडकास्ट-शैली में की गई है। इसमें राहुल ने इस बात पर जोर दिया कि उन्हें सत्ता नहीं बल्कि सत्य की खोज ज्यादा प्रेरित करती है। उन्होंने पारिवारिक कहानियों, व्यक्तिगत प्रथाओं और नेहरू, महात्मा गांधी, डॉ भीमराव आंबेडकर, सरदार वल्लभ भाई पटेल और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं की स्थायी विरासत पर विचार किया। राहुल गांधी ने कहा कि संदीप दीक्षित के साथ इस पॉडकास्ट-शैली की बातचीत में मैं इस बारे में बात करता हूं कि मुझे क्या प्रेरित करता है- सत्य की

खोज- और यह खोज मेरे परदादा जवाहरलाल नेहरू से कैसे प्रेरित है। वह केवल एक राजनेता नहीं थे। वह एक साधक, एक विचारक, एक ऐसा व्यक्ति था जो खतरे में मुस्कुराते हुए आगे बढ़ा और मजबूत होकर निकला।

उनकी सबसे बड़ी विरासत सत्य की उनकी अथक खोज में निहित है- एक सिद्धांत,जिसने उनके द्वारा अपनाई गई हर चीज को आकार दिया।उन्होंने हमें राजनीति नहीं सिखाई, उन्होंने हमें डर का सामना करना और सच्चाई के लिए खड़ा होना सिखाया।

खोज करने, सवाल करने, जिज्ञासा में निहित रहने की जरूरत, यह मेरे खून में है। नेहरू का जिक्र करते हुए राहुल कहते हैं कि मेरी दादी उन्हें पापा कहती थीं। उन्होंने मुझे कहानियां सुनाईं कि कैसे वह अपने पसंदीदा पहाड़ों में एक ग्लेशियर में लगभग गिर गए थे, कैसे जानवर हमेशा हमारे परिवार का हिस्सा थे या कैसे उन्होंने कभी भी व्यायाम का एक घंटा भी नहीं छोड़ा। मेरी मां अभी भी बगीचे में पक्षियों को देखती हैं। मैं जूडो करताहूं। ये सिर्फ़ शौक नहीं हैं- ये हमारी पहचान है। हम निरीक्षण करते हैं। हम अपने आस-पास की दुनिया से जुड़े रहते हैं। और जो हम सबसे गहराई से रखते हैं, वह है शांत शक्ति के साथ चुनौतियों का सामना करने की प्रवृत्ति।राहुल गांधी कहते हैं कि यही वह है, जो गांधी, नेहरू, आंबेडकर, पटेल और बोस वास्तव में सिखा रहे थेः डर से दोस्ती कैसे करें। समाजवाद नहीं, राजनीति नहीं- सिर्फ़ साहस। गांधी एक ऐसे साम्राज्य के सामने खड़े हुए, जिसके पास सिर्फ़ सच्चाई थी। नेहरू ने भारतीयों को उत्पीड़न का विरोध करने और अंततः स्वतंत्रता प्राप्त करने का साहस दिया। कोई भी महान मानवीय प्रयास- विज्ञान, कला, प्रतिरोध- यह सब भय का सामना करने से शुरू होता है। और यदि आप अहिंसा के लिए प्रतिबद्ध हैं, तो सत्य ही आपका एकमात्र हथियार है। चाहे उनके साथ कुछ भी किया गया हो, वे इससे पीछे नहीं हटे। यही बात उन्हें महान नेता बनाती है।राहुल ने कहा कि चाहे मैं बिल गेट्स से बात कर रहा हूं या चेतराम मोची से, मैं उनसे एक ही जिज्ञासा के साथ मिलता हूं। क्योंकि वास्तविक नेतृत्व नियंत्रण के बारे में नहीं है। यह करुणा के बारे में है। और आज के भारत में जहां सत्य असुविधाजनक है, मैंने अपना चुनाव कर लिया है। मैं इसके लिए खड़ा रहूंगा। चाहे कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े।

कांग्रेस ने बांग्लादेश में हिंदू नेता भाबेश चंद्र रॉय की हत्या की निंदा की

नई दिल्ली। कांग्रेस ने बांग्लादेश के दिनाजपुर में हिंदू नेता भावेश चंद्र रॉय की हत्या की निंदा की है और इसे वहां के अल्पसंख्यकों पर लक्षित हमला करार दिया है। पार्टी महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने भारत सरकार से आग्रह किया है कि वह इस मामले को बांग्लादेश सरकार के समक्ष उठाए और उस पर जांच के लिए दबाव डाले। ताकि दोषियों पर सख्त कार्रवाई हो सके।

जयराम रमेश ने आज एक वक्तव्य में कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस बांग्लादेश के दिनाजपुर में हिंदू समुदाय के एक प्रमुख नेता भाबेश चंद्र रॉय की क्रूर हत्या की कड़ी निंदा करती है। अपहरण और हमले के कारण उनकी दुखद मृत्यु इस क्षेत्र में धार्मिक अल्पसंख्यकों में बढ़ती असुरक्षा की भावना की एक भयावह याद दिलाती है। उन्होंने कहा कि यह कोई अकेली घटना नहीं है।

पिछले कुछ महीनों में बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समुदायों पर हमलों की कई और बेहद परेशान करने वाली घटनाएं हुई हैं, जिनमें हिंदू मंदिरों को अपवित्र करने से लेकर अल्पसंख्यकों के घरों और व्यवसायों पर लक्षित हमले शामिल हैं। धमकी और क्रूरता के इस रवैए को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

मोबाइल पर कॉल कर दी खानदान समेत जान से मारने की धमकी

पुलिस प्रशासन से की सुरक्षा की मांग

दैनिक बिहार पत्रिका।सुपौल

जिले की जदिया थाना निवासी पप्पू आलम को फोन कर खानदान समेत जान से मारने की धमकी मिली है। इसे लेकर घबराए पप्पू आलम ने स्थानीय जदिया थाना को सूचना देते हुए मामले की लिखित शिकायत दी है,और पुलिस प्रशासन से सुरक्षा की मांग की है.पप्पूआलम ने बताया कि शुक्रवार को शाम 5:44 बजे मोबाइल नम्बर 8968863356 से मेरे मोबाइल नंबर 957220 6722 पर फोन किया, जब हमने कॉल उठाया तो उस तरफ से कॉल करने वाले व्यक्ति ने मुझे कहा कि तुम मुसलमान हो, तो मैंने कहा कि आप कौन बोल रहे हैं, फीर उन्होने कहा तुम मीडिया में हो, फीर मेरे द्वारा कहा गया कि आप कौन बोल रहे हैं, फीर उन्होंने कहा तुमको बहुत दिन से खोज रहे हैं तुम्हारा खानदान समेत खत्म कर देंगे,धमकी भरे लहजे में कहा तुम व्हाट्सएप चेक करो ऊंची आवाज में धमकाते हुए फोन काट दिया जब मैं व्हाट्सएप खोला उसमें धमकाने वाले व्यक्ति ने चार फोटो भेजा था, जिस फोटो में कारतूस वह पिस्टल मौजूद था।

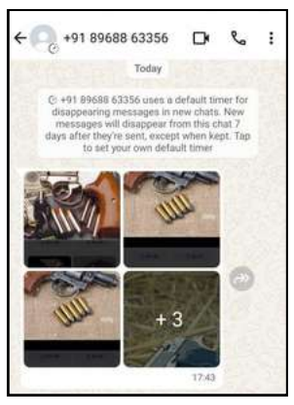

जिस बात की जानकारी हमने तुरंत जदिया थाना प्रभारी राजीव कुमार एवं त्रिवेणीगंज थाना प्रभारी रामसेवक रावत, डीएसपी विपिन कुमार को फोन कर नंबर सहित ऑडियो रिकॉर्ड सहित व्हाट्सएप चैट स्क्रीनशॉट भेजा, उसके बाद जदिया थाना में लिखित शिकायत दी, पप्पू आलम ने कहा मेरे साथ पिछले वर्ष भी थाना क्षेत्र के पीलुवाहा चौक के पास मेरे ऊपर अपराधियों ने गोली चलाकर हत्या का असफल प्रयास किया गया था, जिसमें संयोग वर्ष मेरी जान बच गई थी। ग्रामीणों के सहयोग से मौके पर एक अपराधी सुनील कुमार को पकड़ा था,इस संदर्भ जदिया थाना कांड संख्या 280/23/दर्ज हुआ, उसके बाद जदिया पुलिस ने तीन अपराधियों को और जेल भेजा था, उस मामले की उच्च स्तरीय जांच को लेकर हमने पुलिस के वरीय अधिकारी को आवेदन दिया था, पप्पू आलम ने कहा कि इस धमकी भरे फोन के बाद उनकी परिवार समेत जान को खतरा है,मामले की उचित कार्रवाई के साथ-साथ SP से सुरक्षा की मांग की है।

दो धुर जमीन के लिए जमकर मारपीट, इलाज के क्रम में युवक की मौत

रामरूप राय। बिहार पत्रिका

समस्तीपुर। दलसिंहसराय थाना क्षेत्र में जमीनी विवाद में मारपीट के दौरान घायल एक युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना पगड़ा गांव की है। मृतक की पहचान अरुण राय के पुत्र मणिकांत राय (26) के रूप में हुई है। गुरुवार को मणिकांत के पिता का श्रवण अक्षय राय के परिवार से दो धुर जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। शाम को जब मणिकांत वहां पहुंचा, तब श्रवण राय, अक्षय कुमार और विकास राय ने उस पर हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल मणिकांत को पहले अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिर समस्तीपुर सदर अस्पताल और बाद में एक निजी अस्पताल ले जाया गया। जहां शनिवार को इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।मृतक के पिता का कहना है कि उन्होंने कई बार पुलिस को विवाद की जानकारी दी थी। लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। मात्र दो महीने पहले ही मणिकांत की शादी हुई थी। वह घर का एकमात्र कमाने वाला था। घटना के बाद आरोपी परिवार फरार हो गया है। मौत की खबर सुनते ही मृतक के परिजनों और ग्रामीणों ने पगड़ा चौक के पास एनच-28 को जाम कर दिया। इस संबंध में दलसिंहसराय की प्रभारी थानाध्यक्ष पुष्पलता ने बताया कि मारपीट में दोनों पक्षों के लोग घायल हुए थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

परिजनों ने किया NH-28 जाम

अलग-अलग सड़क दुर्घटना में महिला समेत दो की मौत

पूर्वी चंपारण।जिला के चकिया थाना क्षेत्र में दो अलग अलग सड़क दुर्घटनाओं में एक महिला सहित दो व्यक्ति की मौत हो गयी जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। पहली घटना थाना क्षेत्र के चकिया केसरिया पथ पर शीतलपुर पेट्रोल पंप के निकट की है।जहां पर अनियंत्रित बाइक की ठोकर से एक अधेड़ व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक कल्याणपुर थाना क्षेत्र के सिसवा बसंत गांव निवासी 55 वर्षीय मौजेलाल यादव पिता बालेश्वर यादव बताया जाता है। घटना के बाद सुचना पर पुलिस ने पहुंचकर मौजीलाल यादव को अनुमण्डलीय अस्पताल ले जाकर भर्ती कराया, जहां मौजूद चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना में बाइक चालक की भी घायल होने की बात बतायी जा रही है। पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचकर क्षतिग्रस्त बाइक को जब्त कर लिया। वही मृतक के शव को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए मोतिहारी भेज दिया। इधर घटना की सुचना मिलते ही मृतक के परिवार में कोहराम मच गया। मृतक अपने पीछे विधवा पत्नी तीन पुत्री व एक छोटे पुत्र को छोड़ गए। मृतक के परिजनों का रोते रोते बुरा हाल है। वही दूसरी घटना एनएच के तरनिया गांव के समीप की है। जहां एक लापरवाह ट्रक चालक ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी जिससे एक महिला की दर्दनाक मौत हो गयी। जबकि बाइक चला रहे मृतक महिला का देवर गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतक महिला शिवहर जिला के थाना श्यामपुर भटहा गांव निवासी काजल कुमारी बतायी गयी है। जबकि मृतक महिला का देवर लालू कुमार यादव गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल लालू कुमार यादव का एक निजी नर्सिंगहोम में ईलाज चल रहा है। पुलिस ने क्षतिग्रस्त बाइक को जब्त कर मृतक महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए मोतिहारी भेजा है।

पकरैल में ट्रैक्टर की ठोकर से बच्ची की मौत

महेशखूंट। थाना क्षेत्र के पकरैल में ट्रैकर की ठोकर लगने से एक बच्ची की मौत शनिवार को हो गई। बताया गया कि बच्ची सड़क पर खेल रही थी। उसी समय तेज रफ्तार से आ रही ट्रैक्टर ने ठोकर मार दी। जिसके कारण बच्ची की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। मृतका भागलपुर जिले के नवगछिया के रंगरा गांव निवासी मुनेश्वर शर्मा की 18 माह की पुत्री सोनाक्षी बतायी जा रही है। मुनेश्वर शर्मा अपने रिश्तेदार के यहां शादी समारोह में शामिल होने आया था। घटना की सूचना पर पहुंची महेशखूंट पुलिस शव को अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल खगड़िया भेज दिया।

पानी सप्लाई बंद होने पर ग्रामीणों ने पूसा के हरपुर चौक को किया जाम

मोटर बनाने के आश्वासन के बाद जाम समाप्त

दैनिक बिहार पत्रिका।समस्तीपुर

समस्तीपुर जिले के पूसा प्रखंड अंतर्गत हरपुर पंचायत के वार्ड संख्या-10 मोहल्ला के लोगों ने शनिवार को आक्रोशित होकर हरपुर चौक के पास समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर सड़क को जाम कर दिया। आक्रोशित लोग हरपुर पंचायत के वार्ड संख्या-10 मोहल्ला में बंद नल जल से पानी सप्लाई को शुरू करने की मांग कर रहे थे। सड़क जाम होने के कारण सड़क के दोनों और वाहनों की लंबी कतार लग गई। जिससे गर्मी के इस मौसम में आ रहा लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। ग्रामीणों का बताना है कि हरपुर पंचायत के वार्ड संख्या-10 मोहल्ला में पेयजल के लिए नल जल लगा हुआ है लेकिन पिछले सप्ताह से नल जल खराब पड़ा हुआ है। जिस कारण वार्ड संख्या-10 में पानी की सप्लाई बंद है। फल स्वरुप लोग पानी के लिए परेशान हो रहे हैं।लोगों को दूसरे वार्ड में पानी के लिए जाना पड़ता है। पानी बंद होने की शिकायत वार्ड के लोगों ने वार्ड सदस्य के अलावा पंचायत के मुखिया से की लेकिन इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। जिससे नाराज होकर लोग शनिवार को सड़क पर उतर आए और बांस बल्ला लगाकर जाम

आंदोलन शुरू कर दिया।ग्रामीणों द्वारा किए गए सड़क जाम के कारण समस्तीपुर से मुजफ्फरपुर की तरफ जाने वाले लोगों को तो परेशानी हुई ही इसके अलावा समस्तीपुर की ओर से डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की तरफ जाने वाले लोग भी परेशान हुए। क्योंकि लोगों ने विश्वविद्यालय जाने वाले रास्ते पर भी बांस बल्ला लगाकर जाम कर दिया। हालांकि अधिकारियों द्वारा मोटर को जल्द ठीक कराने का आश्वासन देकर जाम समाप्त कराया गया।

मुर्शिदाबाद हिंसा पर विहिप का फूटा गुस्सा, NIA जांच की मांग

खगड़िया में विहिप का आक्रोश प्रदर्शन, जिलाधिकारी को सौंपा गया ज्ञापन

दैनिक बिहार पत्रिका।खगड़िया

खगड़िया। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हिंदुओं पर हुए बर्बर हमलों के विरोध में शुक्रवार को विश्व हिंदू परिषद खगड़िया इकाई ने जिला मुख्यालय के समक्ष जोरदार धरना और प्रदर्शन किया। जिला मंत्री संजय कुमार वर्मा के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और जिलाधिकारी को घटना की NIA जांच की मांग करते हुए ज्ञापन सौंपा। प्रदर्शन में शामिल विहिप के प्रांत सह विशेष संपर्क प्रमुख नितिन कुमार ने कहा कि बंगाल में हिंदुओं की हत्याएं, आगजनी, लूटपाट, पलायन और महिलाओं के साथ हुई दरिंदगी यह साबित करती है कि राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह विफल रही है। उन्होंने सवाल उठाया कि विरोध प्रदर्शन तो देशभर में होते हैं, लेकिन हिंसा केवल बंगाल में ही क्यों होती है?

उन्होंने कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय साजिश प्रतीत होती है, जिसमें विदेशी बांग्लादेशियों की भूमिका मुख्यमंत्री ममता बनर्जी खुद मान रही हैं, तो फिर NIA जांच से परहेज क्यों?

'72 हूरों के सपने दिखाकर बनाया जाता है जेहादी'

नितिन कुमार ने कहा कि मदरसों में बच्चों को जेहादी मानसिकता दी जाती है, जहां महिलाओं को 'हवस का शिकार' बनाना और हिंदुओं का 'सिंदूर मिटाना' उनका लक्ष्य होता है। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसी शिक्षा व्यवस्थाएं पूरी तरह बर्बर और पिशाच प्रवृत्ति को जन्म देती हैं।

हिंदुओं को जबरन मौत के मुंह में भेज रही सरकार

विहिप के जिलामंत्री संजय वर्मा ने कहा कि राहत शिविरों में रह रहे कई पीड़ित हिंदू परिवारों को जबरन मुर्शिदाबाद वापस भेजा जा रहा है, जबकि वे अपनी सुरक्षा को लेकर डरे हुए हैं। उन्होंने कहा कि जब तक वहां केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती नहीं होती, तब तक उन्हें वहां भेजना जीते जी मारने जैसा है।

हर घर से एक बेटा बने बजरंग दल का योद्धा

विहिप के कोषाध्यक्ष मनीष गुप्ता ने कहा कि अब वक्त आ गया है कि हर हिंदू परिवार से एक बेटा बजरंग दल का प्रशिक्षित कार्यकर्ता बने ताकि लोहे का जवाब लोहे से दिया जा सके। वहीं, मातृशक्ति प्रांत सह संयोजिका अनीता गुप्ता ने कहा कि हिंदू बेटियों को दुर्गा वाहिनी से प्रशिक्षण लेकर आत्मरक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।

इस मौके पर समाजसेवी प्रेम कुमार यशवंत, शत्रुघ्न भगत, राकेश कुमार बुडुल, अशोक चौरसिया, नीरज सिंह, वृंदा देवी, केशव मोदी, शुशील मोदी, संगम कुमार, प्रवीण चौरसिया,राकेश कुमार मदन गुप्ता, सन्नी गुप्ता, रूक्मिणी साहा, सुजीत राणा, धर्मेन्द्र शास्त्री, नीरज गुप्ता, अभिमन्यु कुमार, शिवानी, काजल कुमारी सहित दर्जनों कार्यकर्ताओं ने भाग लियाऔर अपनी बात रखी।

विश्व हिंदू परिषद ने चेताया: अगर हिंदुओं को न्याय नहीं मिला तो देशभर में होगा उग्र आंदोलन।

संक्षिप्त खबर

समस्तीपुरःनुक्कड़ नाटक किया गया आयोजित

दैनिक बिहार पत्रिका,समस्तीपुर। स्थानीय जी एम आर डी कॉलेज मोहनपुर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई व सेहत केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में पोषण पखवाड़े के तहत कुपोषण से मुक्ति पाने हेतु नुक्कड़ नाटक का आयोजन प्रधानाचार्य प्रो.(डॉ.) कुशेश्वर यादव व कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ.लक्ष्मण यादव के नेतृत्व में किया गया। स्वयंसेवकों के द्वारा आम जनों को स्वस्थ्य रहने हेतु समुचित पोषण, मोटे अनाज का उपयोग, आहार में विविधता अपनाने, उपयुक्त वातावरण का निर्माण इत्यादि बिंदुओं के द्वारा कुपोषण से छुटकारा पाने के संबंध में नुक्कड़ नाटक का आयोजन हुआ। मौके पर डॉ.संतोष कुमार, डॉ दिनेश प्रसाद,डॉ.सूर्य प्रताप, सुनील कुमार पासवान,अभय कुमार, डॉ.ब्रजेश कुमार,अर्चना कुमार, डॉ.अर्चना कुमारी, डॉ.चंदन कुमार सिंहा, डॉ.जितेंद्र पांडे, डॉ.मुमताज जहां, पिंकी,माधुरी,प्रीति,मुस्कान,शिवम,आदर्श,विशाल,राहुल इत्यादि उपस्थित थे।

अगलगी से बचाव के बताए गए तरीके

दैनिक बिहार पत्रिका,खगड़िया। अग्निशमन सेवा सप्ताह के दौरान शनिवार को अग्निशामालय के अधिकारियों व कर्मियों द्वारा मानसी के विभिन्न जगहों पर आग से बचाव की जानकारी दी गई। इस दौरान अग्निशमालय पदाधिकारी कृष्ण सुदामा पासवान एवं कर्मी प्रधान अग्निक नारायण, राकेश कुमार, रविकेश कुमार, चमन रजा, जिछु कुमार ने आग से बचाव को लेकर विभिन्न विषयों पर जानकार देंगी। इस दौरान विभिन्न संस्थान प्रबंधन को अग्नि सुरक्षा बचाव के लिए महत्वपूर्ण सलाह दी। वहीं अग्निशमन यंत्र की मासिक एवं फिक्स फायर सिस्टम का समय- समय पर जांच करने की बात कही। वहीं मॉकड्रिल के माध्यम से संस्थान के कर्मी को आग से सुरक्षा की जानकारी दी गई।

दो पक्षों में जमीन विवाद में हुई मारपीट में प्राथमिकी

दैनिक बिहार पत्रिका, खगड़िया। जिले के अलौली थानान्तर्गत रौन गांव मे दो पक्षों के बीच वर्षो से चली आ रही जमीन विवाद में मामला दर्ज किया गया है। गत 16 अप्रैल को ही रौन गांव की अर्चना देवी ने गोरियामी मौजा अन्तर्गत पौने दो बीघा जमीन मे लगी गेहूं फसल लूट लेने, मारपीट एवं रुपये छीन लेने का आवेदन थाना मे ंदी थी। जिसमें पांडव कुमार समेत 10 लोगों को नामजद बनाया था। बताया गया कि पुलिस अवर निरीक्षक रामविलास सिंह ने लूटी गेहूं फसल को वापस देने का आश्वासन देकर गए। बदले मे गेहूं तो मिला। पर, उसके पति को मारपीट कर जख्मी कर दिया। वही रुपये लूटने, गोतनी के साथ अभद्र व्यवहार आदि का आरोप लगाया है। इधर थानाध्यक्ष समरेंद्र कुमार ने बताया कि दोनो पक्षों से जमीन विवाद पुराना है। दोनों तरफ से दिए गए आवेदन पर कांड दर्ज कर छानबीन की जा रही है।

बिजली पंखा से लगा करंट, महिला हुई मूर्छित

दैनिक बिहार पत्रिका,खगड़िया। मोरकाही के सबलपुर गांव में शनिवार को पंखा का तार बिजली के बोर्ड में घुसाने के दौरान करंट लगने से एक महिला मूर्छित हो गई। जिसकी पहचान मोरकाही थाना क्षेत्र के सबलपुर गांव निवासी साहिल पासवान की पत्नी वर्षा कुमारी के रूप में की गई। पंखा चलाने के लिए बिजली के बोर्ड में तार घुसा रही थी। महिला को करट लग गया। जिससे महिला मूर्छित हो गई। जिसके बाद परिजन ने आनन-फानन में इलाज के लिए खगड़िया सदर अस्पताल लाया गया।

एईडीपी के तहत 21 को दी जाएगी ट्रेनिंग

दैनिक बिहार पत्रिका, भागलपुर। बिहार सरकार के उच्च शिक्षा निदेशालय, पटना द्वारा बीएन कॉलेज को 21 अप्रैल को सुबह 11 बजे एप्रेंटिसशिप इन एम्बेडेड डिग्री प्रोग्राम (एईडीपी) के तहत ऑनलाइन ट्रेनिंग दी जाएगी। इस प्रोग्राम के लिए बिहार के विवि से छह कॉलेजों का चयन किया गया है। इसमें बीएन कॉलेज भी है। टीएमबीयू के पीआरओ ने बताया कि एईडीपी ऐसा कार्यक्रम है, जिसमें डिग्री प्रोग्राम के साथ-साथ छात्रों को उद्योग में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य डॉ. अशोक कुमार ठाकुर ने एईडीपी प्रोग्राम के तहत बीकॉम रिटेल ऑपरेशन और बीकॉम ई-कॉमर्स का प्रस्ताव सरकार को भेजा था। इसमें सरकार से वित्तीय सहायता भी दी जाएगी। कुलपति प्रो. जवाहर लाल ने कॉलेज प्रबंधन को इस उपलब्धि पर बधाई दी है।

अररिया जेल में कैदी की मौत, हत्या का आरोप

दैनिक बिहार पत्रिका,अररिया। अररिया जेल में बंद कैदी 46 वर्षीय सोहराब खान उर्फ मुन्ना की शुक्रवार देर रात मौत हो गई। पलासी थाना क्षेत्र के बांसर गांव के रहने वाले सोहराब के परिजनों ने जेल प्रशासन पर हत्या का आरोप लगाया है। परिजनों ने जेल प्रशासन पर उसकी गर्दन मरोड़कर धारदार हथियार से शरीर को जख्मी कर मारने का आरोप लगाया है। सोहराब खान उर्फ मुन्ना को एक पुराने मामले में जमानत रद्द होने के बाद पलासी पुलिस ने बुधवार की रात गिरफ्तार किया था।

संत माइकल : 11वीं में दाखिले की सूचना जारी

दैनिक बिहार पत्रिका,पटना। संत माइकल हाईस्कूल ने 11वीं कक्षा में नामांकन के लिए अपने आधिकारिक वेबसाइट पर सूचना जारी कर दी है। स्कूल ने कहा है कि विज्ञान, वाणिज्य और कला तीनों संकाय को मिलाकर कुल पांच समूहों में नामांकन लिए जाएंगे। नामांकन के लिए छात्रों को आवेदन फॉर्म ऑनलाइन-ऑफलाइन मिलेगा। एक हजार रुपये आवेदन शुल्क जमा करना होगा। फॉर्म की सूचना https://www.stmichaelspatna.edu.in पर मिलेगी।

थ्रेसर के फाइनबेल्ट में फंसने से महिला की मौत

दैनिक बिहार पत्रिका, बैरिया/श्रीनगर। तधवानंदपुर में शनिवार दोपहर गेहूं देउड़ी के दौरान फाइन बेल्ट में फंसने से महिला का एक पैर व हाथ के साथ सिर बुरी तरह कट गया। आननफानन में परिजनों ने उसे जीएमसीएच पहुंचाया। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। थानाध्यक्ष मिथिलेश कुमार ने बताया कि तधवानंदपुर के पारस यादव की पत्नी उमरावती देवी (45) की थ्रेशर की चपेट में आने से मौत हुई है।

हाजीपुर में ठनका से एक वृद्ध महिला की गई जान

दैनिक बिहार पत्रिका, महनार (हाजीपुर)। सरमस्तपुर पंचायत में ठनका गिरने से 55 वर्षीय वृद्ध महिला की मौत हो गई, जबकि इस घटना में एक उनकी पोती की जान बाल-बाल बच गई। जानकारी के अनुसार मृतका भरहो गांव के वार्ड संख्या सात निवासी नागेंद्र पासवान की पत्नी रामवती देवी थी। घटना के संबंध में बताया गया कि रामवती देवी शुक्रवार की सुबह अपनी नौ वर्षीय पोती गीता कुमारी के साथ शौच के लिए घर से बाहर खेत की ओर गई थीं, इसी बीच ठनका वृद्ध महिला के पास गिर पड़ा।

किशनगंज : हादसे में युवक की मौत

दैनिक बिहार पत्रिका,ठाकुरगंज (किशनगंज)। एनएच 327 ई फोरलेन पर शनिवार की दोपहर बालेश्वर फॉर्म के समीप एक तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से बाइक सवार युवक इमरान (20 वर्ष) की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि इमरान लगभग 200 मीटर दूर तक डिवाइडर पार करते हुए मोटरसाइकिल के साथ सड़क के दूसरी ओर जा गिरा और मौके पर ही उसकी सांसें थम गईं। हादसे के बाद ट्रक लेकर चालक भाग निकला। ग्रामीणों ने घटना की सूचना ठाकुरगंज थाना को दी। मृतक युवक इमरान ठाकुरगंज थाना क्षेत्र के कमलडांगी निवासी नसीम आलम का बेटा था। घटना की सूचना पर मृतक के परिजन भी मौके पर पहुंचे। इमरान की मां अफसाना बेगम सड़क पर ही चीत्कार मार कर बार-बार बेहोश हो जी रही थीं। मृतक के मामा मसीउजमा ने बताया कि इमरान रमजान में दिल्ली से लौटा था और कल्वर्ट चौक के समीप सब्जी का दुकान चलाता था। शनिवार दोपहर घर में कहकर निकला कि कलभट चौक से दस मिनट में आता हूं, पर नियति को शायद कुछ और ही मंजूर था।इस संबंध में मौके पर पहुंचे सब इंस्पेक्टर जीतलेश कुमार ने बताया कि दुर्घटना में मृत युवक का शव अंत्य परीक्षण के लिए किशनगंज सदर अस्पताल भेज दिया।

एक राजकुमार, एक आम कुमारी और एक अनपेक्षित प्रेम कहानी — 'द रॉयल्स' 9 मई से नेटफ्लिक्स पर

दैनिक बिहार पत्रिका।पटना

नेटफ्लिक्स और प्रीतिश नंदी कम्युनिकेशंस पहिली बार साथ आ रहे हैं, एक ऐसी रॉयल रोम कॉम लेकर जो प्यार, जुनून और दमदार ड्रामा से भरपूर है।

शाही हुकुमद्वारा, मोरपुर के राजसिंहासन के ढहते झूमरों के नीचे से जारी किया गया फरमान... 'द रॉयल्स' 9 मई को केवल नेटफ्लिक्स पर प्रीमियर होगा।

किसी ज़माने में, रंगीन शहर मोरपुर में एक शाही परिवार रहता था, जिनके पास खुद की कोई दौलत नहीं थी। फिर आई उनके बीचएक तेज-तर्रार लड़की, जो एक बिल्कुल अलग दुनिया से ताल्लुक रखती है। उसका एक ही मकसद होता है—शाही ज़िंदगी को संवारना। लेकिन मोरपुर पैलेस के 'गरीब राजकुमार' को संभालना, उतना आसान नहीं जितना लगता है। जब राजकुमार की चमचमाती दुनिया और आम कुमारी की ज़िद्द और हौसले से टकराती है, चिंगारियाँ उड़ती हैं, अहम टकराते हैं, और एक अनोखी प्रेम कहानी जन्म लेती है।

प्रियंका घोष और नुपुर अस्थाना द्वारा निर्देशित, नेहा वीणा शर्मा द्वारा लिखित और प्रीतिश नंदी कम्युनिकेशंस के बैनर तले निर्मित 'द रॉयल्स' की कल्पना रंगिता और इशिता प्रीतिश नंदी की है, जिन्हें पॉप-कल्चर से भरपूर, तेज़ और प्रभावशाली कहानी कहने के लिए जाना जाता है। इस सीरीज़ में जबरदस्त कलाकारों की कास्ट है, जिसमें देखने मिलेगी एक शानदार नई ऑन-स्क्रीन जोड़ी - भूमि पेडनेकर और इशान खट्टर की। भूमि पेडनेकर, वर्क पोटैटो की महत्वाकांक्षी और निडर सीईओ सोफिया शेखर का किरदार निभा रही हैं, और इशान खट्टर, एक चार्मिंग पार्टी प्रिंस अविराज सिंह की भूमिका में नज़र आएंगे।

इसके साथ ज़ीनत अमान, साक्षी तंवर, नोरा फतेही, डिनो मोरया, मिलिंद सोमन, चंकी पांडे, विहान समत, काव्या त्रेहान, सुमुखी सुरेश, उदित अरोड़ा, लीज़ा मिश्रा और ल्यूक केनी दिलचस्प भूमिकाओं में हैं।निर्माता रंगिता प्रीतिश नंदी और इशिता प्रीतिश नंदी ने कहा, 'द रॉयल्स' के साथ हमने एक ऐसी प्रेम कहानी रची है जो महलों और भारतीय रॉयल्टी के पुराने आकर्षण को आज की आधुनिक सच्चाई से जोड़ती है—जहां प्यार आसान नहीं है। यह कहानी दो बिलकुल अलग-अलग दुनिया से आए लोगों की है, जो अपनी-अपनी लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं, हमेशा एक-दूसरे से टकरा रहे हैं, फिर भी किसी अनजानी ताक़त से एक-दूसरे की ओर खिंचे चले आते हैं—जैसे हम अक्सर अच्छे इंसान से नहीं, बल्कि उसी से प्यार कर बैठते हैं जिससे मुसीबत पक्की होती है। यही है 'द रॉयल्स'। जैसे-जैसे वे एक-दूसरे से भिड़ते हैं, चुनौती देते हैं, गुस्से से भर उठते हैं —उन्हें यह भी जानना होगा कि क्या उनका प्यार इस तूफान में टिक पाएगा। इसमें मिलेगा ड्रामा, ह्यूमर और ज़बरदस्त केमिस्ट्री! यह हमारा नेटफ्लिक्स के साथ पहला प्रोजेक्ट है और 'द रॉयल्स' को हम दुनियाभर के दर्शकों तक ले जा जाते हुए हम रोमांचित हैं। नेटफ्लिक्स इंडिया की सीरीज़ हेड तान्या बामी ने कहा, " हम चाहते हैं कि हर कहानी जो हम सुनाते हैं, वह हमारे दर्शकों की कल्पना को इतना छू जाए कि वे उस शो को पसंद करें, प्यार करें और अपने दोस्तों, परिवार के साथ साझा करें। रोम कॉम कहानियों का एक खास आकर्षण होता है – ये हमें हँसाती हैं, प्यार पर विश्वास करना सिखाती हैं और उस खूबसूरत उथल-पुथल को अपनाना सिखाती हैं जो प्यार के साथ आती है। 'द रॉयल्स' के साथ, हमने एक आधुनिक प्रेम कहानी रची है, जिसमें आज के समय की उलझनें भी हैं। जैसे 'ब्रिजरटन' और 'एमिली इन पेरिस' ने दुनिया को दिखाया कि रोमांटिक कहानियाँ कितनी प्रभावशाली हो सकती हैं, वैसे ही 'द रॉयल्स' उसी जोश और रोमांच के साथ आपको एक ऐसे दुनिया में लाता है जो अनअपोलोजेटिकली इंडियन है। यह सिर्फ एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह एक शाही कहानी है जिसे हार्ट, ह्यूमर और स्टाइल के साथ नए सिरे से गढ़ा गया है। प्रीतिश नंदी कम्युनिकेशन के साथ इस कहानी को बनाना हमारे लिए बहुत खुशी की बात रही है और अब हम दर्शकों द्वारा इसे पसंद किए जाने का इंतजार नहीं कर सकते।"" 'द रॉयल्स' एक ऐसी रोमांटिक यात्रा का वादा करता है जिसमें हैं कई अनपेक्षित मोड़, दमदार केमिस्ट्री और एक परफेक्ट सवाल हैं – "क्या वो कर पाएंगे या नहीं" जहां गर्मियों की मस्ती पीछे छूट गई है, वहीं ये ऑन-स्क्रीन जोड़ी अब अपने जोशीले अंदाज़ से स्क्रीन पर आग लगाने को तैयार है।

रेल विस्तार एवं विकास मंच की बैठक संपन्न, होगा आंदोलन

27 अप्रेल को 3 बजे से डीआरएम चौक स्थित यात्री शेड में होगी मंच की विस्तारित बैठक

दैनिक बिहार पत्रिका । समस्तीपुर

समस्तीपुर। रेल विस्तार एवं विकास मंच की बैठक माधुरी चौक पर संयोजक शत्रुधन राय पंजी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मंच के सदस्य सह भाकपा माले के सुरेंद्र प्रसाद सिंह, माकपा के रधुनाथ राय, कांग्रेस के डोमन राय, ट्रेड यूनियन नेता एस के निराला आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। भोला टाकीज एवं मुक्तापुर रेल गुमटी पर औवरब्रीज निर्माण कार्य शुरू करने, रेल कारखाना में पीओएच निर्माण कार्य शुरू करने, अटेरन चौक रेल गुमटी पर औवरब्रीज निर्माण करने, माधुरी चौक स्थित चिल्ड्रेन पार्क का जीर्णोद्धार करने, अनुमंडल रेल अस्पताल को केंद्रीय अस्पताल का दर्जा देने, कर्पूरीग्राम-ताजपुर-पातेपुर-महुआ-भगवानपुर, केबल स्थान- कर्पूरीग्राम एवं दलसिंहसराय -पटोरी नई रेल लाईन योजना आदि को मंजूरी देने की मांग को लेकर रेल कारखाना पर क्रमिक अनशन आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया।अपने अध्यक्षीय संबोधन में शत्रुघ्न राय पंजी ने कहा कि भोला टाकीज एवं मुक्तापुर रेल गुमटी पर औवरब्रीज निर्माण का शिलान्यास पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा किया गया। फिर निर्माण कार्य का शिलान्यास सांसद शांभवी चौधरी द्वारा किया गया लेकिन निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ। बार-बार शिलान्यास कर जिलेवासियों को गुमराह किया जाता है। उन्होंने अविलंब निर्माण कार्य शुरू करने की मांग की। माकपा के रधुनाथ राय एवं भाकपा माले के सुरेंद्र प्रसाद सिंह ने कहा कि उक्त दोनों गुमटी समस्तीपुर का लाईफ लाईन है। औवरब्रीज निर्माण कार्य शुरू कराने की लेकर मंच जिलेवासियों को साथ लेकर आंदोलन की शुरुआत करेगी।

चुनाव की तैयारी तेज: मतदाता सूची सुधार को लेकर राजनीतिक दलों की बैठक

निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी ने की अपील – मतदाता जागरूकता में दल निभाएं सक्रिय भूमिका

दैनिक बिहार पत्रिका। समस्तीपुर

पटोरी। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की सरगर्मी तेज हो गई है। निर्वाचन आयोग से लेकर मतदान केंद्र तक तैयारियों ने रफ्तार पकड़ ली है। इसी क्रम में शनिवार को मोरवा विधानसभा (135) के निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सह भूमि सुधार उपसमाहर्ता पटोरी की अध्यक्षता में सभी प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में पदाधिकारी ने बताया कि मतदाता सूची और मतदान केंद्र चुनाव प्रक्रिया के मूल आधार हैं, लेकिन बड़ी संख्या में लोग अब भी

मतदाता सूची से अनभिज्ञ रहते हैं। इससे मतदान के दिन समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसको लेकर सभी दलों से अपील की गई कि वे जनजागरूकता अभियान चलाएं ताकि अधिक से अधिक छूटे हुए लोग अपने नाम सूची में दर्ज करवा सकें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मृत, दोहरी प्रविष्टि वाले या स्थाई रूप से स्थानांतरित मतदाता वोटर टर्नआउट के प्रतिशत को प्रभावित करते हैं। ऐसे मतदाताओं की पहचान कर सूची से हटाने में सहयोग करने की आवश्यकता है। सभी दलों को बूथ लेवल एजेंट (BLA) की शीघ्र नियुक्ति करने और मतदाता सूची की निगरानी में सक्रिय भूमिका निभाने को कहा गया। पदाधिकारी ने बताया कि मतदाता सूची में नाम जोड़ना एक सतत प्रक्रिया है। इसके लिए नागरिक निर्वाचन आयोग की वेबसाइट, वोटर हेल्पलाइन ऐप या नजदीकी BLO, प्रखंड कार्यालय व अनुमंडल कार्यालय के माध्यम से फॉर्म-6 भर सकते हैं। बैठक में राजद से सुरेश राय, मुन्ना कुमार यादव, जदयू से प्रभात कुमार सिंह, सवेंदु शरण, भाकपा माले से राम पुकार महतो सहित कई अन्य दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

आवास सहायक के साथ राजद और जदयू नेता पर थाने में केस दर्ज

कुमार चंदन। दैनिक बिहार पत्रिका

शम्भुगंज/बांका। आवास योजना को लेकर दो अलग - अलग जगहों पर मारपीट मामले में रामचुआ पंचायत के आवास सहायक रंजन कुमार ,जदयू जिला उपाध्यक्ष सह वैदपुर पंचायत के पूर्व मुखिया राजीव रंजन और राजद नेता सह रामचुआ पंचायत के मुखिया पति शैलेश यादव के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। जिसमें वैदपुर के पूर्व मुखिया राजीव रंजन पर पंचायत समिति सदस्य रंजना देवी ने आवास सहायक संतोष साह का मदद करने पर अकारण गाली - गलौज और पुत्र विशाल के साथ पिटाई करने का आरोप लगाया है। जबकि रामचुआ पंचायत की महिला सविता कुमारी ने आवास सहायक रंजन कुमार और मुखिया पति शैलेश यादव पर मारपीट करने का आरोप लगाया । पीड़िता ने बताया कि तीन दिन पहले पति कंतलाल मंडल पड़ोस में लाभुकों को आवास प्लस के तहत सूची में नाम जोड़ने में मदद कर रहे थे । इतने में आवास सहायक रंजन कुमार और शैलेश यादव ने गाली - गलौज करते हुए मारपीट करना शुरू कर दिया । यह देख जब पति को बचाने पहुंची तो उक्त दोनों ने पिटाई कर दी । इस संबंध में राजीव रंजन और शैलेश यादव ने अपने उपर लगे आरोप को निराधार बताया है। थानाध्यक्ष मंटू कुमार ने बताया कि उपरोक्त के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। इसकी गंभीरता से जांच कर दोषी पर कार्रवाई होगी।

सर्वप्रथम जनता के समस्या समाधान को दें प्राथमिकता - जयंत राज मंत्री

कुमार चंदन। दैनिक बिहार पत्रिका

शम्भुगंज/बांका। स्थानीय विधायक सह भवन निर्माण मंत्री जयंत राज क्षेत्रीय दौरा के दूसरे दिन छत्रहार पंचायत के गोयड़ा , मालडा के अलावा भलुआ , राजघाट , इटवा , भूमिहारा इत्यादि कई गांवों का भ्रमण किया । ग्रामीणों का हाल जानते हुए समस्याओं से भी अवगत हुए । अधिकांश गांव के ग्रामीणों ने मंत्री के समक्ष पेयजल समस्या समाधान की बात रखी । कई किसानों ने महिनों से कृषि के लिए सिंचाई कन्केशन नहीं मिलने की समस्या बताया। जिस पर मंत्री ने अविलंब समाधान का भरोसा दिया। इस दौरान शिक्षक बालेश्वर कुमार , पंकज सिंह सहित अन्य ने मंत्री के सामने अजगैबीनाथ धाम से भाया

शंभुगंज होते हुए वैधनाथधाम रेलखंड पर चर्चा की । बताया कि सिर्फ पत्राचार से कुछ नहीं होगा ,जब तक घोषणा नहीं हो जाता है और काम प्रारंभ नहीं हो जाता है। इस पर मंत्री ने भरोसा दिलाया कि अगले सप्ताह रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव का आगमन जमालपुर में है। जिसमें इस विंदू पर प्रमुखता से बात रखी जाएगी । जल्द ही इस विधान सभा के जनता को रेल सुविधा मिलेगा । अंत में मंत्री ने स्थानीय पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं से कहा कि सर्वप्रथम जनता के समस्या समाधान को प्राथमिकता दें । उन्होंने कार्यकर्ताओं से यह भी कहा कि क्षेत्र का दौरा करें और सरकार की उपलब्धियां को प्रमुखता से बताएं । क्षेत्र में जो भी समस्या हो , उसे सूचीबद्ध कर भेजें। मौके पर बीडीओ नीतीश कुमार, जदयू प्रखंड अध्यक्ष बालेश्वर प्रसाद , जिला उपाध्यक्ष राजीव रंजन, ब्रह्म प्रकाश कुशवाहा,जदयू नेता करू मंडल, मुखिया अंकित पासवान, जदयू नेता दिनेश मंडल, सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थें।

किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष से किसान हितों से जुड़े मुद्दों पर विचार-विमर्श करना- मनिष पकंज मिश्रा

दैनिक बिहार पत्रिका।गया

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन बिहार प्रदेश के कार्यालय नूतन नगर कालीबाड़ी मैं भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं भाजपा किसान मोर्चाके प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह का आगमन हुआ जिसमें भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. शंभू कुमार, एवं राष्ट्रीय महामंत्री बाबु भाई जवेरिया अमूल कंपनीके डायरेक्टर, भोला भाईबिहार भाजपा प्रदेश किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह, और अन्य प्रमुख पदाधिकारीगण शामिल हुए हैं। इन सभी सम्माननीय अतिथियों के आगमन पर संगठन के सभी सदस्यगण अत्यंत उत्साहित एवं गौरवान्वित महसूस किया गया ।इस अवसर पर राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश अध्यक्ष एवं भाजपा किसान मोर्चा के नेता डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया है। उन्होंने परंपरानुसार अतिथियों को अंग वस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं सम्मान चिह्न प्रदान कर उनका अभिनंदन किया है।इस मुलाकात का उद्देश्य किसान हितों से जुड़े मुद्दों पर विचार-विमर्श करना और मानवाधिकारों की रक्षा में किसानों की भूमिका को सुदृढ़ करना था। इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न वक्ताओं ने किसान कल्याण, जैविक खेती, न्यूनतम समर्थन मूल्य और ग्रामीण विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार रखे।इस मुलाकात ने एक सकारात्मक कदम बताया और भविष्य में किसान हित और मानवाधिकार के संयुक्त प्रयासों को मजबूत करने का संकल्प लिया है। अंत में, सभी उपस्थित राष्ट्रीय नेताओं के द्वारा डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा को धन्यवाद दिया गया एवं आशीर्वाद के रूप में भाजपा एवं संगठन में और आगे बढ़े इस अवसर पर भाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता पूर्व मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर कुंदन कुमार सिंह शशांक मिश्रा महेश यादव बबलू गुप्ता मंटू कुमार आदि उपस्थित थे।

मध्य विद्यालय सौढ़ भरतखण्ड में 'सुरक्षित शनिवार' पर चला 'हजार्ड हंट' जागरूकता अभियान

खतरों की पहचान और निवारण की दी गई जानकारी, विद्यार्थियों ने लिया सुरक्षा का संकल्प

दैनिक बिहार पत्रिका । खगड़िया

खगड़िया जिले के परबत्ता प्रखंड अंतर्गत मध्य विद्यालय सौढ़ भरतखण्ड में शनिवार को 'मुख्यमंत्री सुरक्षित शनिवार' कार्यक्रम के तहत अप्रैल माह के तीसरे शनिवार को 'हजार्ड हंट' विषय पर विशेष जागरूकता अभियान चलाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानाचार्य संजय कुमार पासवान और शिक्षक सिद्धार्थ कुमार के संयुक्त नेतृत्व में की गई। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री पासवान ने कहा कि 'हजार्ड हंट' का मुख्य उद्देश्य आमजन को उनके आसपास मौजूद खतरों की पहचान कर उनसे निपटने के लिए तैयार करना है।

क्या है 'हजार्ड हंट'?

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि 'हजार्ड हंट' एक सुरक्षा जागरूकता अभियान है, जो हमारे दैनिक जीवन में मौजूद संभावित खतरों की पहचान कर उन्हें समय रहते दूर करने पर बल देता है। उन्होंने बताया कि यह जागरूकता घर, स्कूल, कार्यस्थल या किसी भी सार्वजनिक स्थान पर लागू की जा सकती है।उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि गीली फर्श, ढीले तार, आग लगने की आशंका वाले उपकरण, या अव्यवस्थित सामान जैसे खतरे बच्चों और बड़ों के लिए गंभीर दुर्घटनाओं का कारण बन सकते हैं। 'हजार्ड हंट' का उद्देश्य है इन्हें पहले से पहचान कर आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाना।

बच्चों ने सीखी सुरक्षा की बारीकियाँ

विद्यालय में मौजूद सैकड़ों छात्र-छात्राओं को इस दौरान जीवन रक्षक व्यवहार और सुरक्षात्मक आदतों को अपनाने की प्रेरणा दी गई।

सभी छात्रों ने प्रतिज्ञा ली कि वे अपने स्कूल और घर में संभावित खतरों की पहचान कर उन्हें हटाने में सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

इस अवसर पर शिक्षकगण निरंजन कुमार, रामविनोद साह, रामलाल पंडित, मीनाक्षी कुमारी, सफकत आफरीन सहित उत्कर्ष कुमार, सार्थक कुमार, प्रीतम, आयुष, राजनंदिनी, प्रियांशु, निक्की, शिवानी, अंजली, अनुष्का, आंचल, वंदना भारती, सोनम समेत विद्यालय के सैकड़ों छात्र और छात्राएं मौजूद थे।

कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य श्री पासवान ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम से बच्चों में सुरक्षा के प्रति गंभीरता विकसित होती है, जो एक सुरक्षित भविष्य की नींव रखता है।

फसल क्षति मुआवजा और स्वास्थ्य केंद्र निर्माण को लेकर जिप अध्यक्ष ने की डीएम से वार्ता

दैनिक बिहार पत्रिका।खगड़िया

असमय आए भारी बारिश और तूफान से हुई फसल क्षति के विरुद्ध खगड़िया जिले में किसानों को मुआवजा देने की मांग पर जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा कुमारी यादव ने लिया संज्ञान। इस बाबत जिला परिषद अध्यक्ष सह जिला परिषद अध्यक्ष संघ की प्रदेश अध्यक्ष कृष्णा कुमारी यादव तथा उप विकास आयुक्त अभिषेक पलासिया ने शनिवार को समाहरणालय में जिला पदाधिकारी अमित कुमार पाण्डेय से मुलाकात कर फसल क्षति के भौतिक सत्यापन और मुआवजा प्रस्ताव को सरकार तक भेजने को लेकर सकारात्मक वार्ता की।

किसानों की फसल क्षति पर जिप अध्यक्ष ने जतायी चिंता

जिप अध्यक्ष कृष्णा कुमारी यादव ने कहा कि खगड़िया, मानसी, अलौली, बेलदौर, चौथम, गोगरी और परवत्ता प्रखंडों में गेहूं मक्का और तेलहन जैसी फसलों को भारी नुकसान हुआ है। साथ ही आम और लीची,केला जैसे फलों के पेड़ ,मंजरी और छोटे फल भी झर गए, जिससे किसानों को बड़ा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा है। उन्होंने

जिला पदाधिकारी से प्रभावित क्षेत्रों का भौतिक सत्यापन कराकर प्राथमिकता के आधार पर किसानों को मुआवजा देने हेतु प्रस्ताव सरकार को भेजा जाए।जिस पर जिला पदाधिकारी अमित कुमार पाण्डेय ने जिला कृषि पदाधिकारी को अविलंब सभी प्रकार के क्षतिग्रस्त फसलों का सर्वेक्षण कराकर रिपोर्ट जमा करें। ताकि मुआवजा हेतु सरकार को भेजा जा सके। वहीं डीएम ने हेल्थ सेंटर भवन निर्माण से जुड़े समस्याओं के निपटारा के लिए भवन निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता को निर्देश दिए।

स्वास्थ्य केंद्र भवन निर्माण पर जिप अध्यक्ष का बड़ा ऐलान

बतौर जिप अध्यक्ष ने जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने की दिशा में भी कदम उठाए। उन्होंने बताया कि बेलदौर प्रखंड के कंजरी गांव में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का निर्माण लंबे समय से रुका हुआ है।

संवेदक द्वारा कमजोर प्राक्कलन का हवाला देकर कार्य रोक दिया गया था। अब उसे जिला परिषद योजना के तहत सुसज्जित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर भवन का निर्माण कराएगा।

अन्य क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्र निर्माण का निर्णय

उन्होंने चौथम प्रखंड के रोहियार बंगलिया पंचायत और गोगरी प्रखंड के कोयला- बसुआ में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर भवन निर्माण की प्रक्रिया जल्द शुरू करने का आश्वासन दिया। श्रीमती यादव ने विश्वास भरे लहजे में कहा कि इन परियोजनाओं के लिए भूमि और हेल्थ सेंटर भवन निर्माण हेतु राशि जिला परिषद द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। वार्ता के दौरान उप विकास आयुक्त अभिषेक पलासिया, जिला कृषि पदाधिकारी और भवन निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता समेत अन्य अधिकारी उपस्थित थे। इस मौके पर जिप अध्यक्ष ने किसानों के हितों और स्वास्थ्य सुविधाओं को प्राथमिकता देने के लिए हर संभव प्रयास करने का वचनबद्धता दोहराई। जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती यादव का यह कदम किसानों और आम जनता के लिए राहत की उम्मीद बनकर सामने आई है।

पंजाब में 13 आतंकी गिरफ्तार, रॉकेट से चलने वाले ग्रेनेड, आईईडी और आरडीएक्स मिले

जालंधर (एजेंसी)। पंजाब पुलिस ने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ISI और बब्बर खालसा इंटरनेशनल से जुड़े 13 आतंकी गिरफ्तार किए हैं। इसमें 1 नाबालिग है। 4 दिन से चल रहे पंजाब पुलिस के ऑपरेशन में दो आतंकी मॉड्यूल का सफाया किया गया है। पुलिस का दावा है कि इनके निशाने पर थाने-प्रमुख लोग थे। पकड़े गए आतंकियों से 2 रॉकेट प्रोपेल्ड ग्रेनेड 1 ग्रेनेड लांचर, ढाई-ढाई किलो की दो इंप्रोवाइस्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस, डेटोनेटर, 2 हथगोले, रिमोट कंट्रोल और 2 किलो रॉयल डिमॉलिशन एक्सप्लोसिव, 5 पिस्तौल (बेरेटा और ग्लॉक), 6 मैगजीन, 44 कारतूस, 1 वायरलेस सेट और 3 वाहन मिले हैं। शनिवार को डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि ये लोग आईएसआई के इशारे पर देशविरोधी गतिविधियों में शामिल थे। गिरफ्तार आतंकियों ने कई थानों को भी टारगेट करना था। जल्द सभी को कोर्ट में पेश कर रिमांड पर लिया जाएगा। पंजाब पुलिस के डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि पंजाब पुलिस ने खुफिया जानकारी के आधार पर चलाए गए दो अभियानों में बब्बर खालसा इंटरनेशनल द्वारा विदेश से संचालित किए जा रहे आईएसआई समर्थित आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है।

प्यार में बच्चे बन रहे थे रोड़ा, दही-चावल में मिलाकर खिला दिया जहर

-तीनों बच्चों की मौत, महिला प्रेमी से करना चाहती थी शादी

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना में एक महिला ने अपने प्रेमी के लिए अपने तीन बच्चों को दही चावल में जहर मिलाकर खिला दिया और किसी को शक न हो इसलिए खुद भी थोड़ा सा जहर खा लिया। बाद में बच्चों के साथ उसे भी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां पर उसकी जान तो बच गई लेकिन तीन बच्चे मौत की आगोश में सो गए। पुलिस के मुताबिक संगारेड्डी में पिछले महीने हुई इस घटना की जांच चल रही थी। आरोपी महिला रजिता एक निजी स्कूल में शिक्षिका थी, जिस रात रजिता ने अपने तीनों बच्चों को जहर खिलाए उस रात उसका पति घर पर नहीं था। तीनों बच्चों और मां पर जहर का असर देख पुलिस का शक पति पर गया। क्योंकि परिवार में वही अकेला बचा था लेकिन पूछताछ के दौरान पुलिस को उससे ज्यादा कोई जानकारी नहीं लगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक रजिता ने तीनों बच्चों की हत्या की योजना बड़ी ही चालाकी और समझदारी से बनाई। पुलिस ने बताया कि स्कूल रियूनियन के दौरान रजिता अपने एक पूर्व क्लासमेट से मिली..जहां से दोनों की मुलाकात और बातचीत शुरू हो गई और फिर धीरे-धीरे अफेयर हो गया। रजिता अपनी शादी से खुश नहीं थी और वह अपने प्रेमी के साथ एक नई जिंदगी शुरू करना चाहती थी लेकिन उसके बच्चे इसमें सबसे बड़ी समस्या थे..उसे लग रहा था कि बच्चों के साथ वह घर छोड़कर नहीं जा सकती है।

कुख्यात अंडरवर्ल्ड डॉन रहे मुथप्पा के बेटे पर हुआ जानलेवा हमला

बेंगलुरु (एजेंसी)। कुख्यात अंडरवर्ल्ड डॉन रहे मुथप्पा राय के बेटे रिकी राय पर शुक्रवार देर रात को जानलेवा हमला हो गया। यह हमला बेंगलुरु के पास बिददी इलाके में हुआ है। पुलिस ने जानकारी दी कि हमला तब हुआ जबकि रिकी अपनी कार से ड्राइवर और गनमैन के साथ बेंगलुरु लौट रहा था। इसी बीच उनके घर से महज 200 मीटर की दूरी पर रात करीब 1:30 बजे एक अज्ञात हमलावर ने दो राउंड फायरिंग कर घायल कर दिया। दोनों घायलों को बेंगलुरु के मणिपाल अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करा दिया गया है। डॉक्टरों का कहना है कि दोनों घायल खतरे से बाहर हैं। पुलिस सूत्रों की मानें तो रिकी हाल ही में रूस की विदेश यात्रा करके लौटे थे और पारिवारिक मामलों को सुलझाने में लगे हुए थे। ऐसे में रिकी पर हुए हमले की एक वजह रियल एस्टेट कारोबारी से चल रहा विवाद बताया जा रहा है। हमले के पीछे रिकी के ड्राइवर ने एक बिल्डर और रिकी की पहली पत्नी पर शक जाहिर किया है। यहां बताते चलें कि अंडरवर्ल्ड डॉन रहे मुथप्पा राय के एक पुराने दुश्मन पर भी शक की सुई है, जिसकी जांच की जा रही है। रिकी पर हुए जानलेवा हमले के बाद बिददी पुलिस स्टेशन में अटेंप्ट टू मर्डर और आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस का कहना है कि हमले की सभी बिंदुओं पर जांच की जा रही है।

भारत की आपत्ति के बाद रद्द हुआ श्रीलंका और पाकिस्तान सैन्य अभ्यास

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका के त्रिंकोमाली तट के निकट होने वाला सैन्य अभ्यास रद्द हो गया है। भारत की आपत्ति के बाद श्रीलंका और पाकिस्तान का यह प्रस्तावित अभ्यास फिलहाल रोक दिया गया है। यह वही त्रिंकोमाली है जहां भारत, श्रीलंका और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) मिलकर एक ऊर्जा हब विकसित कर रहे हैं। भारत ने इस अभ्यास को लेकर अपनी चिंताओं को श्रीलंका सरकार के समक्ष दृढ़ता से उठाया, जिसके बाद इस योजना को रद्द कर दिया गया। सूत्रों के अनुसार, यह नौसैनिक अभ्यास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की श्रीलंका यात्रा से कुछ सप्ताह पहले प्रस्तावित किया गया था। मोदी की इस यात्रा के दौरान भारत और श्रीलंका के बीच पहली बार एक रक्षा सहयोग समझौता हुआ, साथ ही यूएई के साथ त्रिपक्षीय ऊर्जा परियोजना को लेकर भी एक समझौता हुआ जिसमें मल्टी-प्रोडक्ट पाइपलाइन और द्वितीय विश्व युद्ध के समय के तेल टैंक फार्म का विकास शामिल है। भारतीय अधिकारियों को जैसे ही इस संयुक्त अभ्यास की जानकारी मिली, कोलंबो स्थित भारतीय उच्चायोग ने श्रीलंकाई प्रशासन से संपर्क किया और इस पर गहरी चिंता जताई। भारत ने साफ कहा कि इस क्षेत्र में उसके महत्वपूर्ण रणनीतिक हित हैं और इस तरह के अभ्यास भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि यह अभ्यास पाकिस्तान की ओर से जानबूझकर भारत को उकसाने की कोशिश के रूप में देखा गया। इसके बाद श्रीलंकाई प्रशासन ने चुपचाप इस अभ्यास को रद्द कर दिया, हालांकि पाकिस्तानी पक्ष ने इसका विरोध किया था।

बीजेपी अध्यक्ष की रेस में मोदी के तीन मंत्री, खट्टर को मिल सकती है कमान?

-संगठन में काम करने वाले कुछ लोगों की कैबिनेट में भी हो सकती है एंट्री

नई दिल्ली(एजेंसी)। जल्द हो सकता है बीजेपी के नए अध्यक्ष का ऐलान। चर्चा है कि अप्रैल के आखिर तक जेपी नड्डा के विकल्प के तौर पर नए नेता के नाम की घोषणा हो सकती है। मीडिया रिपोर्ट में बीजेपी सूत्रों का कहना है कि केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर का नाम भी अध्यक्ष पद की दौड़ में है। इसके अलावा मोदी सरकार में ही मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और भूपेंद्र यादव के नामों की भी चर्चा है। कहा तो यह भी जा रहा है कि इन तीन नेताओं में से किसी एक को अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी जा सकती है।

अध्यक्ष पर फैसला लेने से पहले आरएसएस की सलाह भी ली जाएगी। वहीं उससे पहले यूपी, बंगाल, आंध्र प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में अध्यक्ष का फैसला भी लिया जाएगा। तभी राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होना है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि बीजेपी 25 अप्रैल तक यूपी समेत कई राज्यों में अध्यक्षों का ऐलान कर सकती है। इसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए नामांकन दाखिल किया जाएगा।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि मनोहर लाल खट्टर को लेकर सहमति बनने की संभावना ज्यादा है। इसकी वजह है कि वह पीएम नरेंद्र मोदी के करीबी हैं और उनकी पहली पसंद भी हैं। लंबे समय तक आरएसएस प्रचारक के तौर पर काम करने वाले मनोहर लाल खट्टर को संगठन की अच्छी समझ है। इसके अलावा आरएसएस भी उनके नाम पर सहमति दे सकता है, जो मानता है उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि के नेता के हाथ में ही पार्टी की कमान होनी चाहिए।

इसके अलावा धर्मेंद्र प्रधान और भूपेंद्र यादव के नाम पर की भी चर्चा है। हालांकि मनोहर लाल खट्टर सबसे आगे माने जा रहे हैं। पीएम नरेंद्र मोदी और मनोहर लाल खट्टर के दशकों पुराने रिश्ते हैं। यही नहीं बीजेपी में महासचिव के तौर पर भी राज्यों से कई नेताओं को शामिल किया जा सकता है। ये वे नेता होंगे, जो पूर्व मंत्री या सीएम जैसे पदों पर रह चुके हैं, लेकिन इन दिनों उनके पास कोई बड़ा दायित्व नहीं है। वहीं अभी संगठन में काम करने वाले कुछ लोगों को कैबिनेट में भी एंट्री दी जा सकती है। एनडीए सरकार में सहयोगी दलों की डिमांड है कि कैबिनेट का विस्तार किया जाए और उनके नेताओं को एंट्री मिले। इस बीच बिहार में चुनाव होना है और उससे पहले उपेंद्र कुशवाहा को मंत्री पद दिया जा सकता है। वहीं एकनाथ शिंदे की पार्टी को भी मौका मिल सकता है, जो डिप्टी सीएम तो हैं, लेकिन बीच-बीच में उनकी नाराजगी की खबरें आती रहती हैं। चर्चाएं यह भी हैं कि मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का एक साल पूरा होने के मौके पर भी कैबिनेट विस्तार हो सकता है।

2008 मालेगांव विस्फोट मामले की सुनवाई पूरी, एनआईए अदालत ने फैसला सुरक्षित रखा

नई दिल्ली। विशेष एनआईए अदालत ने महाराष्ट्र के नासिक जिले के सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील शहर मालेगांव विस्फोट मामले में करीब 17 साल बाद सुनवाई पूरी होने के बाद शनिवार को फैसला सुरक्षित रख लिया। 29 सितंबर, 2008 को मुंबई से करीब 200 किलोमीटर दूर मालेगांव में एक मस्जिद के पास मोटरसाइकिल पर बंधे विस्फोटक उपकरण के फटने से छह लोगों की मौत हो गई थी और 100 से ज्यादा लोग घायल हो गए थे। अभियोजन पक्ष ने शनिवार को मामले की सुनवाई के अंत में कुछ उद्धरणों के साथ अपनी अंतिम लिखित दलीलें दाखिल कीं, जिसके बाद विशेष न्यायाधीश ए के लाहोटी ने मामले को फैसले के लिए 8 मई तक के लिए स्थगित कर दिया। मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष ने 323 अभियोजन गवाहों से पूछताछ की, जिनमें से 34 अपने बयान से पलट गए। लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित, भाजपा नेता प्रज्ञा ठाकुर- मेजर रमेश उपाध्याय (सेवानिवृत्त), अजय राहिरकर, सुधाकर द्विवेदी, सुधाकर चतुर्वेदी और समीर कुलकर्णी पर गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) और भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) के तहत मुकदमा चल रहा है। 2011 में एनआईए को सौंपे जाने से पहले मामले की जांच महाराष्ट्र आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने की थी। एनआईए ने मामले को अपने हाथ में लेने के बाद 2016 में ठाकुर और तीन अन्य आरोपियों- श्याम साहू, प्रवीण टकलकी और शिवनारायण कलसांगरा को क्लीन चिट देते हुए आरोपपत्र दाखिल किया था। एनआईए ने कहा था कि उनके खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला है और उन्हें मामले से बरी किया जाना चाहिए। हालांकि, एनआईए अदालत ने साहू, कलसांगरा और टकलकी को बरी कर दिया और फैसला सुनाया कि साध्वी को मुकदमे का सामना करना पड़ेगा।

देहरादून में गहरा रहा जल संकट, बिना मीटर कनेक्शन वाले कर रहे पानी का दुरुपयोग

देहरादून (एजेंसी)। जल संस्थान विभाग सुचारु पेयजल सप्लाई देने का दावा करता है, लेकिन रोज हजारों लोग पानी के संकट से जूझ रहे हैं। भीषण गर्मी में यह समस्या और भी बढ़ जाती है। शहर में 1.70 लाख से ज्यादा पेयजल कनेक्शन बिना मीटर के हैं। ऐसे में पानी का दुरुपयोग हो रहा है। लोग पीने-नहाने से ज्यादा पेयजल का दुरुपयोग धुलाई-सिंचाई आदि कार्यों में कर रहे हैं। जल संस्थान विभाग की पांच शाखाओं के जरिए से शहर के 1.90 लाख घर और प्रतिष्ठान में पेयजल सप्लाई होती है। प्रति व्यक्ति को जल संस्थान हर दिन 135 लीटर पानी देने का दावा करता है। इस हिसाब से जल संस्थान सभी उपभोक्ताओं की पूर्ति के लिए रोजाना 25.43 करोड़ लीटर पेयजल की सप्लाई करता है।

इसमें से 20.71 करोड़ लीटर का जल संस्थान को राजस्व मिलता है। जबकि 4.72 करोड़ लीटर पेयजल का कोई हिसाब नहीं है। यह पानी क्षतिग्रस्त पाइपलाइनों, लीकेज और दुरुपयोग के कारण बर्बाद हो रहा है, जबकि पेयजल कनेक्शनों में मीटर लगाकर काफी हद तक पानी के दुरुपयोग को रोका जा सकता है, लेकिन हालात यह हैं कि नत्थनपुर स्थित एफआइयू शाखा के 12 हजार कनेक्शन को छोड़कर अधिकांश शाखाओं के कनेक्शन बिना मीटर के हैं। मीटर लगे कनेक्शन में उपभोक्ताओं को बूंद-बूंद की कीमत चुकानी पड़ती है। इससे उपभोक्ता पेयजल का दुरुपयोग करने से बचते हैं। पानी की खपत कम होने से ट्यूबवेल कम चलता है और बिजली की खपत में अंकुश लगता है। आमतौर पर मैनुअल कनेक्शन में दो महीने का बिल 750 रुपए आता है। जबकि मीटर वाले कनेक्शन में दो महीने में 40 हजार लीटर पानी का इस्तेमाल करने पर 430 रुपए बिल आता है। वहीं, 40 हजार लीटर से ज्यादा पानी का इस्तेमाल करने पर 14.40 रुपए प्रति हजार लीटर के हिसाब से कीमत चुकानी पड़ती है। अगर सामान्य पेयजल का इस्तेमाल देखा जाए तो मीटर वाले कनेक्शन में उपभोक्ताओं को फायदा है। जल संस्थान विभाग नया पानी का कनेक्शन देने के लिए सामान्य वर्ग से चार हजार रुपए शुल्क वसूलता है। गरीबी रेखा से नीचे और पिछड़ा वर्ग के लोगों से सिर्फ 100 रुपए शुल्क लिया जाता है, लेकिन इसके बावजूद उपभोक्ताओं के कनेक्शन में मीटर नहीं लगाया जा रहा है। जल संस्थान ने हाल में पित्थूवाला शाखा के अंतर्गत इंदिरानगर क्षेत्र में 4,500 कनेक्शन में मीटर लगाने का कार्य शुरू किया। दक्षिण शाखा के पलटन बाजार और खुड़बुड़ा क्षेत्र में करीब तीन हजार मीटर लग चुके हैं, लेकिन यह अभी शुरू नहीं हुए हैं।

मेरे जीवनकाल में ही लागू हो महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण

- सुप्रीम कोर्ट की जज बीवी नागरत्ना ने एक कार्यक्रम में जताई इच्छा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट की जज बीवी नागरत्ना ने लोकसभा और राज्य की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण को जल्द लागू करने की वकालत की है। उन्होंने कहा कि यह ऐतिहासिक कदम उनके जीवनकाल में ही साकार हो और यह दिन भारत के संविधान निर्माताओं द्वारा देखे गए वास्तविक समानता के सपने पूरे होने का प्रतीक बनेगा।

जस्टिस नागरत्ना सितंबर 2027 में भारत की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश बनने जा रही हैं। वह एक पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 के तहत लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण देने का प्रावधान है। मुझे उम्मीद है कि यह कानून हमारे जीवनकाल में लागू होगा। यह दिन महिलाओं द्वारा सदियों से चली आ रही समानता की लड़ाई की परिणति होगा।

जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि महिलाएं सार्वजनिक जीवन और जिम्मेदारियों में अपनी उचित हिस्सेदारी की हकदार हैं। उन्होंने कहा कि वह पुरुषों की जगह नहीं ले रही हैं, बल्कि उस अधिकार क्षेत्र को वापस ले रही हैं, जिसे पितृसत्तात्मक सोच और भेदभाव ने उनसे छीन लिया था। हम पुरुष विरोधी नहीं हैं, हम महिला समर्थक हैं। उन्होंने हाल ही में कानून आयोग के अध्यक्ष नियुक्त हुए सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त जज डी एन महेश्वरी से अपील की कि वे महिलाओं के खिलाफ भेदभाव करने वाले सभी कानूनों का अध्ययन करें और केंद्र सरकार को ऐसे सभी कानूनों को संशोधित करने के लिए सिफारिशें भेजें।

उन्होंने यह भी कहा कि संविधान में समानता का अधिकार केवल कागजों पर नहीं, बल्कि व्यवहारिक रूप में भी दिखना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अब समय आ गया है कि देश की आधी आबादी को समान अवसर और प्रतिनिधित्व मिले।

मिथुन चक्रवर्ती ने फिर की पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग, शत्रुघ्न सिन्हा ने दिया ये जवाब

कोलकाता (एजेंसी)। भाजपा नेता और अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती ने मुर्शिदाबाद में हुई हिंसा के मद्देनजर पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने का अनुरोध करते हुए कहा कि चुनाव के दौरान कम से कम दो महीने के लिए राज्य में सेना तैनात की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैंने कई बार अनुरोध किया है और मैं अभी भी गृह मंत्री से अनुरोध कर रहा हूं। कम से कम चुनाव के दौरान दो महीने के लिए सेना को तैनात करें। अगर उन्हें तैनात किया जाता है, तो निष्पक्ष चुनाव हो सकेंगे। चक्रवर्ती ने बंगाल पुलिस की भी आलोचना की और कहा कि जब भी कोई दंगा या उपद्रव होता है, तो वे बस एक कुर्सी लेकर आते हैं, बैठ जाते हैं और देखते हैं जैसे कि यह कोई तमाशा हो। और एक बार जब यह खत्म हो जाता है, तो वे अपनी कुर्सियाँ समेट कर घर चले जाते हैं। यही उनका काम है। आँखें बंद करके, सब कुछ अनदेखा करके। मिथुन ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बारे में बात करते हुए कहा कि अगर वो मैडम (ममता बनर्जी) वाकई चाहतीं तो एक दिन में सब कुछ बंद हो सकता था। उन्होंने कहा कि एक दिन और सब खत्म हो जाता। लेकिन अभी तक उन्होंने कुछ भी नहीं कहा है। वैसे, वो अलग बात है। बंगाल में अभी सनातनी लोग, ईसाई, सिख- हमारे सभी

भाई- वे इस पार्टी को वोट नहीं देने वाले हैं। उनका समय अब खत्म हो चुका है, इसलिए आपको उनके वोट बैंक को खुश रखना है। इसलिए चाहे कुछ भी गलत हो जाए, उनके खिलाफ कुछ नहीं कहा जाएगा। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि वक्फ संशोधन अधिनियम सिर्फ एक बहाना है और इसे कवर के तौर पर इस्तेमाल किया गया है, जबकि असली एजेंडा कुछ और है।

क्या उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे एक साथ आएंगे ?

- राज ठाकरे ने परोक्ष रूप से उद्धव ठाकरे को युति का प्रस्ताव दिया

- अब उद्धव ठाकरे की प्रतिक्रिया पर सबकी निगाहें

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की राजनीति में पिछले एक दशक से यह सवाल पूछा जा रहा है कि क्या उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे एक साथ आएंगे ? पिछले दो-तीन वर्षों में महाराष्ट्र की राजनीति में जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद कई लोगों ने ठाकरे बंधुओं के एक साथ आने की इच्छा व्यक्त की है। अब ऐसा लगता है कि राज ठाकरे ने अब इस युति की सराहना की है। महेश मांजरेकर के वीडियो पॉडकास्ट वास्तव में सच में राज ठाकरे ने परोक्ष रूप से उद्धव ठाकरे को युति का प्रस्ताव दिया। उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण बात ये कही कि महाराष्ट्र हमारे विवाद से बड़ा है। यानि राज ठाकरे ने शिवसेना को एक तरह का प्रस्ताव देते हुए कहा है कि विवाद और संघर्ष महाराष्ट्र के अस्तित्व से बहुत छोटे हैं। राज ठाकरे ने कहा है कि महाराष्ट्र के अस्तित्व के लिए साथ आने में कुछ भी गलत नहीं है। हमारी बहस और झगड़े छोटे होते हैं। राज ठाकरे ने एक साक्षात्कार में कहा कि महाराष्ट्र बहुत बड़ा है और इसके लिए एक साथ आने में कोई समस्या नहीं है। जब महेश मांजरेकर ने राज ठाकरे से ये सवाल पूछा कि शिवसेना अलग हो या नहीं, क्या आप फिर भी एक साथ आ सकते हैं? इस पर प्रतिक्रिया देते हुए राज ठाकरे ने अपनी स्थिति स्पष्ट की। राज ठाकरे ने कहा, मुद्दा सिर्फ इच्छा का है. यह मेरे स्वार्थ का मामला नहीं है. हमारे विवाद किसी भी कारण से छोटे हैं, महाराष्ट्र बहुत बड़ा है। यह महाराष्ट्र के अस्तित्व के लिए है। मराठी लोगों के अस्तित्व के लिए बाकी सब कुछ महत्वहीन है। हमें बड़ी तस्वीर देखने की ज़रूरत है, मुझे नहीं लगता कि एक साथ आना और साथ रहना बहुत मुश्किल है। यह मेरी इच्छा और स्वार्थ का सवाल नहीं है। बहरहाल अब राज के बयान के बाद उद्धव ठाकरे की प्रतिक्रिया पर सबकी निगाहें टिकी हैं। मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने उद्धव ठाकरे को युति का प्रस्ताव भेजा है।

गुजरात में विहिप और बजरंग दल ने प्रदर्शन कर पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की

अहमदाबाद (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर हिंसक हमलों की घटनाओं को लेकर विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) और बजरंग ने आज गुजरात के कई शहरों में प्रदर्शन किया। साथ ही दोनों हिन्दू संगठनों ने पश्चिम बंगाल में तुरंत राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर अत्याचार और वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 के विरोध में भड़की हिंसा को लेकर पूरे गुजरातभर में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ विरोध की लहर चल रही है। विहिप और बजरंग दल सहित हिंदू संगठनों ने गुजरात के सूरत और अहमदाबाद शहरों में रैलियां और धरने आयोजित किए हैं और ममता सरकार पर हिंदू विरोधी नीतियों और हिंसा को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। इसके साथ ही पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की भी मांग की गई है। अहमदाबाद में विश्व हिंदू परिषद ने ममता बनर्जी के खिलाफ अपना गुस्सा जाहिर किया। हिंदू विरोधी ममता सरकार जैसे नारों के साथ विहिप कार्यकर्ताओं ने शहर में रैलियां निकालीं और बंगाल में हिंदुओं की दुर्दशा का मुद्दा उठाया। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि वक्फ कानून के विरोध के नाम पर बंगाल में हिंदू परिवारों को निशाना बनाया जा रहा है। यह दावा किया गया कि पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद और दक्षिण 24 परगना जैसे क्षेत्रों में 500 से अधिक हिंदुओं के घर ध्वस्त कर दिए गए। विहिप ने बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की ताकि हिंदुओं की सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित हो सके। दक्षिण गुजरात के सूरत में विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल और अन्य हिंदू संगठनों ने संयुक्त रूप से शहर के प्रमुख इलाकों में विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने बंगाल में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा और उनके घरों पर हमलों का हवाला देते हुए ममता बनर्जी की नीतियों को हिंदू विरोधी बताया। सूरत कलेक्टर को एक ज्ञापन देते हुए हिन्दू संगठनों ने दावा किया कि पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर विधर्मियों द्वारा हमले किए जा रहे हैं और कई हिंदू परिवारों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा है। ज्ञापन में बंगाल में केंद्रीय बलों की तैनाती और कानून व्यवस्था में सुधार के लिए तत्काल कदम उठाने की मांग की गई।

हेडली है 26/11 हमले का मास्टरमाइंड एनआईए के सामने तहव्वुर राणा का बड़ा खुलासा

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनआईए की हिरासत में तहव्वुर राणा ने 26/11 मुंबई हमलों में अपनी भूमिका से इनकार किया है। उसने हेडली को मास्टरमाइंड बताया है। राणा अपने परिवार से बात करना चाहता है और खानपान को लेकर परेशान है। वो पूछताछ में पूरा सहयोग भी नहीं कर रहा है। मुंबई हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा ने एनआईए की कस्टडी में बड़ा खुलासा किया है। सूत्रों का कहना है कि तहव्वुर राणा 26/11 के हमले में खुद की भूमिका से इनकार कर रहा है। उसने हेडली को हमले का मास्टरमाइंड बताया है। उसने जांच एजेंसी से कहा है कि हमले में उसकी कोई भूमिका नहीं है। हेडली जिम्मेदार है। सूत्रों ने ये भी बताया कि तहव्वुर राणा को अपने परिवार की चिंता सता रही है। वो परिवार से बातचीत करना चाहता है। उसनेभाई से बात करने के बारे में जांच एजेंसी से प्रक्रिया पूछ रहा है। एनआईए की हिरासत में राणा पूछताछ में सहयोग नहीं कर रहा है। वो नॉनवेज खाना चाहता है लेकिन उसे नियमों के आधार पर ही खाना दिया जा रहा है। तहव्वुर राणा का स्वास्थ्य फिलहाल ठीक है। उसका समय पर मेडिकल हो रहा है। जांच एजेंसी तहव्वुर राणा को 26/11 हमले में मिले सबूतों को दिखाकर पूछताछ रही है। सूत्रों का ये भी कहना है कि तहव्वुर राणा, जिसे सेंट्रलाइज्ड एसी बिल्डिंग में रखा गया है, वो दिल्ली की गर्मी से परेशान है। राणा का कहना है कि यहां बहुत ज्यादा गर्मी है। वो कनाडा में रहने वाले अपने छोटे भाई से बात करना चाहता है। राणा पूछताछ के दौरान अधिकारियों से भारत की न्यायिक प्रक्रिया के बारे में जानकारी जुटाने की कोशिशें कर रहा है। वो अपने खिलाफ लगे सेक्शन में कानून की धाराओं के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहा है। विदेश मंत्रालय की ओर से गुरुवार को मुंबई हमले में तहव्वुर राणा और पाकिस्तान के कनेक्शन पर बड़ा बयान आया था। मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा था, पाकिस्तान लाख कोशिशें कर ले लेकिन वैश्विक आतंकवाद के केंद्र के रूप में उसकी पहचान बनी ही रहेगी। तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण पाकिस्तान के लिए एक चेतावनी है कि उसे मुंबई हमलों के अन्य अपराधियों को कटघरे में लाना होगा।

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के बाद अब ब्लॉकचेन वोटिंग सिस्टम की सुगबुगाहट

डॉ. राघवेन्द्र शर्मा

आज जब स्वयं को विकासशील और विकसित कहने वाले अनेक राष्ट्र मतपत्र आधारित चुनाव प्रणाली में ही उलझे हुए हैं, तब हमारा भारत देश अत्याधुनिक चुनाव प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन तक का सफर तय कर चुका है।

वैश्विक स्तर पर स्थापित सत्य है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। एक ऐसा देश जहां लगभग डेढ़ अरब लोग निवास करते हैं। जनसंख्या के लिहाज से यह इतना बड़ा आंकड़ा है कि भारत का एक-एक शहर अपने भीतर एक से अधिक राष्ट्र समाहित कर लेने की हद तक फैला हुआ है। फिर भी हमारे देश के नागरिक बेहद आधुनिक चुनाव पद्धति के माध्यम से ग्रामीण, शहरी, जनपदीय, जिला, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर भली भांति हर प्रकार की सरकारों का गठन लोकतांत्रिक प्रणाली से कर रहे हैं। आज जब स्वयं को विकासशील और विकसित कहने वाले अनेक राष्ट्र मतपत्र आधारित चुनाव प्रणाली में ही उलझे हुए हैं, तब हमारा भारत देश अत्याधुनिक चुनाव प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन तक का सफर तय कर चुका है। एक जमाना ऐसा था जब हमारे यहां भी मतपत्र प्रणाली पर आधारित चुनाव प्रक्रिया व्यवहार में लाई जाती थी। लेकिन इस देश ने और देश के चुनाव आयोग ने मतपत्र प्रणाली पर आधारित चुनाव प्रक्रिया अपनाते हुए अनेक प्रतिकूल, बेहद खतरनाक परिणाम भी देखे। कई दशकों तक येन केन प्रकारेण सत्ता पर काबिज बने रहने अथवा सत्ता पर काबिज होने के लिए मतदान प्रणाली की सात्विकता का हरण किया जाता रहा। जिसकी लाठी उसकी भैंस की तर्ज पर अनेक अवसरवादी, सत्ता लोलुप और नैतिकता से लगभग नाता तोड़ चुके घाघ राजनेता बूथ कैप्चरिंग करते रहे। नकली मत पेटियों से असली मत पेटियां बदली जाती रहीं। चुनावी टीम को एक प्रकार से अपहृत करते हुए मनपसंद उम्मीदवार के चुनाव चिन्ह पर यंत्रवत ठप्पे लगाए जाते रहे। इस पाप पूर्ण कृत्य का विरोध करने पर जागरूक मतदाताओं, चुनाव कराने वाले कर्मचारियों, अधिकारियों, पत्रकारों को मौत के घाट उतारा जाता रहा। फल स्वरुप एक समय ऐसा भी आया जब गांव की पंचायत से लेकर देश की लोकसभा तक, विभिन्न सदनों में, बाहुबल के बल पर जीत कर आए, आपराधिक पृष्ठभूमि के जनप्रतिनिधियों की संख्या चिंताजनक रूप से बढ़ गई। जब देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न चुनाव रक्त रंजित होने लगे, तब देश के प्रबुद्ध वर्ग को चिंता हुई?। यह विमर्श किए जाने लगे कि ऐसा क्या किया जाए, जिससे चुनाव में रक्तपात ना हो। निर्वाचित होकर भी वही लोग सदन में पहुंचे मतदाता जिन्हें स्वेच्छा से चुनना चाहते हों। तब देश के सामने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का विकल्प सामने आया। तमाम अध्ययनों के बाद, कोई खामी शेष न रह जाए यह सुनिश्चित करने के बाद, अपराधी किस्म के नेता बूथ कैप्चरिंग ना कर पाएं यह संतुष्टि करने के बाद, अंततः देश ने ईवीएम यानि कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन आधारित चुनाव प्रणाली को अपना लिया। इस प्रकार वर्ष 1982 में केरल राज्य के उत्तरी पारावुर विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में पहली बार ईवीएम आधारित चुनाव प्रणाली का इस्तेमाल किया गया। यह

चुनाव उम्मीद से कहीं आगे जाकर शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। मतदान के परिणाम भी पारंपरिक मत पत्रों पर आधारित चुनाव प्रणाली की अपेक्षा बहुत जल्दी प्राप्त हो गए। अपवाद स्वरूप प्राप्त बेहद सीमित आपत्तियों के अलावा कोई उल्लेखनीय खामी सामने नहीं आई, जिसके चलते इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन आधारित चुनाव प्रणाली को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करने का निर्णय लिया गया। बाद में जब विधानसभाओं और लोकसभा चुनाव में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का प्रयोग शुरू हुआ तो इसकी पारदर्शिता और सात्विकता पर अनेक उंगलियां उठीं। फल स्वरुप देश के चुनाव आयोग ने राज्यसभा, लोकसभा, विभिन्न प्रांतो की विधानसभाओं के अलावा कलेक्टरेटों में, और जहां तक संभव हो सकता था वहां तक इन मशीनों का प्रदर्शन किया। सभी स्तर के आम और खास लोगों को इसकी प्रक्रिया बताई व दिखाई गई। साथ में शिकायतें सुझाव एवं आपत्तियां मंगाई गईं। हर एक शिकायत, आपत्ति और सुझाव पर बारीकी से विचार विमर्श हुआ। जो सुझाव उचित लगे उन्हें व्यवहार में लाया गया। जिन शिकायतों अथवा आपत्तियों में तार्किकता दिखाई दी, उन्हें पूरी ईमानदारी से निराकृत किया गया। जब इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों की सात्विकता, उनकी पारदर्शिता को लेकर व्यापक स्तर पर संतुष्टि काबिज हो गई, तब कहीं जाकर इस चुनाव प्रणाली को वृहद स्तर पर व्यवहार में लाया गया। यह बात और है कि चुनाव में मुंह की खाने वाले राजनेता और राजनीतिक दल, जीतने वाले सत्ताधारी दल पर और चुनाव आयोग पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों में धांधलियां करने के आरोप मढ़ते रहे। लेकिन वह लोग कभी भी कोई तार्किक तथ्य सामने ना रख सके, जिससे उनके आरोपों को सही न माना गया। वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन आधारित चुनाव प्रणाली भली भांति चुनावी दायित्वों का निर्वहन कर रही है। सब कुछ ठीक-ठाक होने के बावजूद केवल चुनाव आयोग ही नहीं, अपितु देश इस बात को लेकर चिंतित है कि हमारे यहां मतदान का प्रतिशत अपेक्षाकृत अभी कम ही बना हुआ है। इस समस्या को लेकर जो तथ्य सामने आ रहे हैं, उनके मुताबिक देश के नागरिक बार-बार के चुनावों से तंग आ चुके हैं। बात सही भी है, कोई साल और महीना ऐसा नहीं बीतता जब देश के किसी प्रांत, जिले, नगर, जनपद अथवा गांव में चुनाव संपन्न ना होता हो। परिणाम स्वरूप आम आदमी तो बार-बार के चुनावों से तंग तो आया ही, चुनावी आचार संहिता के बने रहने से विकास कार्य भी प्रभावित बने रहते हैं। आम आदमी के साथ-साथ विकास की गति को इस मुसीबत से छुटकारा दिलाने के लिए ही देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एक राष्ट्र एक चुनाव की पुरजोर वकालत कर रहे हैं। यदि यह चुनाव प्रणाली देश में लागू होती है तो फिर आम आदमी को विभिन्न पदों के निर्वाचन हेतु बार-बार मतदान केंद्रों पर नहीं भटकना पड़ेगा। इससे मतदाताओं के अंतर्मन में गहरे तक पैठ चुकी ऊब से छुटकारा मिलेगा तथा मतदान प्रतिशत को बढ़ाया जा सकेगा। इसी के साथ विकास कार्य भी निरंतरता के साथ संपादित किये जा सकेंगे।

इसका मतलब यह हुआ कि भारत की वर्तमान चुनाव प्रणाली बखूबी अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है। उसकी पारदर्शिता और सात्विकता वैश्विक स्तर पर प्रामाणिकता प्राप्त कर चुकी है। ऐसे में यदि एक और नई चुनाव प्रणाली की बात की जाए तो फिर सवाल यह खड़ा होता है कि जब सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है तो फिर एक और नया प्रयोग क्यों? इसका जवाब कुछ यूं हो सकता है कि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है, यह सोचकर हाथ पर हाथ रखकर बैठते हुए भविष्य की चुनौतियों का सामना नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए - अभी भी चुनाव कराने के लिए लाखों पोलिंग बूथ, करोड़ों चुनाव अधिकारी - कर्मचारी, सुरक्षा बलों की व्यापक स्तर पर तैनाती, भारी पैमाने पर आर्थिक खर्चे तथा आम आदमी की मतदान केंद्रों तक आवाजाही, वह समस्याएं हैं जिनका हल हमें आज ही ढूंढना होगा। क्योंकि जैसे-जैसे मतदान प्रतिशत बढ़ेगा, व्यवस्थाएं, नियुक्तियां और खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ते चले जाने हैं। इन सभी के निराकरण स्वरूप दिमाग में एक संभावित चुनाव प्रणाली का ध्यान आता है, जिसका नाम है ब्लॉकचेन आधारित वोटिंग सिस्टम। यदि इस प्रणाली पर व्यापक वार्ता, बहस, विमर्श आदि हों तो परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले सारगर्भित नतीजों से भारतीय लोकतंत्र के लिए नई संभावनाओं को तराशा जा सकता है। लेकिन इसके लिए, पहले हमें यह समझना होगा कि आखिर ब्लॉकचेन आधारित वोटिंग सिस्टम काम कैसे करेगा।

इसका सबसे पहले चरण होगा मतदाता का पंजीयन। यह आधार कार्ड या किसी डिजिटल आईडी का उपयोग कर-के चुनाव आयोग द्वारा ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन माध्यम से सत्यापित किया जा सकता है।

दूसरे क्रम पर आती है मतदान प्रक्रिया। इसे संपन्न कराने के लिए चुनाव आयोग प्रत्येक मतदाता को एक डिजिटल टोकन अथवा कोड प्रेषित करेगा, जिसके माध्यम से मतदाता जहां है वहीं से मान्यता प्राप्त गैजेट को माध्यम बनाकर अपने मनपसंद उम्मीदवार के पक्ष में मतदान कर सकेगा। बदले में उसे डिजिटल स्वरूप में ही तत्काल मतदान की रसीद चुनाव आयोग द्वारा भेजी जा सकेगी। मतदाता द्वारा चुनाव आयोग को भेजा गया उपरोक्त मतदान ब्लॉक चैन सिस्टम में दर्ज होगा जिसे बदला नहीं जा सकेगा।

तीसरे क्रम पर मतगणना की बारी आती है। होगा यह कि जैसे ही मतदान संपन्न होगा और मतगणना के लिए सिस्टम का सर्वर ऑन किया जाएगा, वैसे ही डिजिटल स्वरूप में मतगणना के परिणाम मतदान में इस्तेमाल किए गए गैजेट पर दिखाई देने लगेंगे। मतगणना में कौन आगे और कौन पीछे चल रहा है, यह रुझान भी ठीक उसी प्रकार प्रदर्शित हो सकेंगे जिस प्रकार स्टॉक मार्केट में शेयरों के भाव उतार-चढ़ाव के रूप में देखा जाना प्रचलन में बना हुआ है। अंत में यह परिणाम भी देखा जा सकेगा कि चुनाव में कौन हारा और जीत किसके हिस्से में आई। ब्लॉक चैन वोटिंग सिस्टम के एक्सप्लोरर का उपयोग करके हार जीत का अंतर क्या रहा, यह भी बगैर लंबी प्रतीक्षा के तत्काल देखा जा सकेगा। खास बात यह कि इस चुनाव प्रणाली में भी डिजिटल रूप से दर्ज हुए आंकड़ों में किसी भी प्रकार का हेर फेर नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि सारा डेटा इंक्रिप्टेड और सुरक्षित ही रहने वाला है।

संपादकीय

पक्षपाती रवैया खत्म हो

वक्फ संशोधन कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दरम्यान सरकार ने आश्वासन दिया कि सेंटर वक्फ काउंसिल और वक्फ बोर्ड में किसी गैर-मुस्लिम की नियुक्ति नहीं की जाएगी। मौजूदा वक्फ संपत्तियों पर किसी तरह की कार्रवाई न करने तथा वक्फ संशोधन कानून, 2025 के कुछ प्रावधानों पर फिलहाल अमल न करने की बात भी की। अदालत ने सरकार को जवाब देने के लिए सात दिन का वक्त दिया है। अगले आदेश तक वक्फ, जिसमें वक्फ बाय यूजर भी शामिल है, में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। न ही संबंधित कलेक्टर इनमें कोई बदलाव करेगा। 1995 के अधिनियम के तहत जिन वक्फ संपत्तियों का पंजीकरण हुआ है, उनको अगली सुनवाई तक गैर-अनूसूचित न करने का स्पष्ट निर्देश भी दिया गया है। अदालत में वक्फ कानून की वैधता को इस आधार पर चुनौती दी गई थी कि जैन, सिख व अन्य अल्पसंख्यकों के धर्म पर ऐसे कानून लागू नहीं होते। जैसा कि नये कानून के अनुसार वही शख्स अपनी संपत्ति दान कर सकता है, जो कम से कम पांच साल से मुसलमान हो यानी इस्लाम अपना चुका हो। दान की जाने वाली संपत्ति का मालिकाना हक भी रखता हो। शीर्ष अदालत ने सरकार से तल्ख सवाल किया कि क्या वह हिन्दुओं के धार्मिक ट्रस्टों में मुसलमान या गैर- हिन्दुओं को शामिल करने जा रही है? इस कानून के पारित होने के बाद हुई हिंसा की भी निंदा की। हरियाणा, महाराष्ट्र, मप्र, असम, छत्तीसगढ़ व राजस्थान जैसे भाजपा शासित राज्यों में अलग-अलग याचिकाएं दायर की गई हैं। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के अनुसार वक्फ के पास देश भर में 8.7 लाख संपत्तियां हैं जिनकी अनुमानित कीमत 1.2 लाख करोड़ रुपये है। कोई भी चल/अचल संपत्ति वक्फ होती है, जिसे अल्लाह के नाम पर मुसलमान धार्मिक या परोपकार के मकसद से दान करता है। अल्लाह ही हमेशा उसका मालिक होता है। इस तरह का चलन मंदिरों से लेकर अन्य धर्मों में भी है। मंदिरों के पास बगैर कागजात वाली संपत्ति कम नहीं हैं। इसलिए सरकार को कानून बनाते हुए सभी धार्मिक स्थलों के अधिकार क्षेत्र वाली चल/अचल संपत्ति पर यह कानून लागू करना चाहिए था। पूर्वाग्रहों से भरे पक्षपात करने वाली मोदी सरकार को इससे बचना चाहिए था। वक्फ की आड़ में संप्रदाय विशेष को लेकर टिप्पणियां या नया कानून बनाने की जल्दबाजी देश की अखंडता पर प्रहार कर सकती है।

चिंतन-मनन

भौतिकवाद से उपजी दुर्गति

ऊंचा महल खड़ा करने के लिए किसी दूसरी जगह गड्ढे बनाने पड़ते हैं। मिट्टी, पत्थर, चूना आदि जमीन को खोदकर ही निकाला जाता है। एक जगह टीला बनता है तो दूसरी जगह खाई बनती है। संसार में दरिद्रों, अशिक्षितों, दुःखियों, पिछड़ों की विपुल संख्या देखते हुए विचार उठता है कि उत्पादित सम्पदा यदि सभी में बंट गई होती तो सभी लगभग समान स्तर का जीवन जी रहे होते।

अभाव एक ही कारण उत्पन्न हुआ है कि कुछ लोगों ने अधिक बटोरने की विज्ञान एवं प्रत्यक्षवाद की विनिर्मित मान्यता के अनुरूप यह उचित समझा है कि नीति, धर्म, कर्त्तव्य, शालीनता, समता, परमार्थ परायणता जैसे उन अनुबंधों को मानने से इंकार कर दिया जाए जो पिछली पीढ़ियों में आस्तिकता और धार्मिकता के आधार पर आवश्यक माने जाते थे। पशुओं को जब नीतिवान परोपकारी बनाने के लिए बाधित नहीं किया जा सका, तो बन्दर से मानव रूप में विकसित मनुष्य को यह किस आधार पर समझाया जा सके कि उसे उपार्जन तो करना चाहिए पर उसको उपभोग में ही समाप्त नहीं कर देना चाहिए।

विज्ञान के साथ सज्ञान का समावेश यदि रह सका होता तो भौतिक और आत्मिक सिद्धान्तों पर आधारित प्रगति का लाभ हर किसी को समान रूप से मिलता पर किया क्या जाए? भौतिक विज्ञान जहां शक्ति व सुविधा प्रदान करता है, वहीं प्रत्यक्षवादी मान्यताएं नीति, धर्म, संयम, स्नेह, कर्त्तव्य आदि को झुठला देती हैं। ऐसी दशा में उद्दंडता अपनाए हुए समर्थ का दैत्य-दानव बन जाना स्वाभाविक है।

नवजीवन और जीवन के बदलाव का प्रतीक पर्व है 'ईस्टर'

योगेश कुमार गोयल

क्रिसमस के अलावा 'ईस्टर' को भी ईसाई धर्म का सबसे बड़ा और प्रमुख पर्व माना जाता है। दरअसल दोनों ही पर्व ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं। प्रतिवर्ष गुड फ्राइडे के तीसरे दिन रविवार को मनाया जाने वाला 'ईस्टर संडे' ईसाइयों का महत्त्वपूर्ण धार्मिक पर्व है, जो इस वर्ष 20 अप्रैल को मनाया जा रहा है। गुड फ्राइडे के दिन ईसा मसीह के बलिदान को याद कर जहां ईसाई धर्म के लोग दुखी होते हैं, वहीं ईस्टर संडे पर उनकी खुशी दोगुनी होती है क्योंकि ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार गुड फ्राइडे के बाद आने वाले रविवार को दुनिया को प्रेम और करुणा का संदेश देने वाले शांति के मसीहा ईसा मसीह पुनः जीवित हुए थे और उनके जीवित होने की खुशी में ईसाई धर्म को मानने वाले लोग 'ईस्टर संडे' मनाते हैं। इस पवित्र दिन को 'ईस्टर दिवस' तथा 'ईस्टर रविवार' के नाम से भी जाना जाता है। ईस्टर ईसाई समुदाय के लिए खुशियां मनाने का प्रमुख पर्व है, जिसे ईसा मसीह के चमत्कारों में से एक माना जाता है। ईसाई धर्म के प्रसिद्ध ग्रंथ 'बाइबिल' में भी उल्लेख है कि ईस्टर संडे के दिन पुनः जीवित होने के बाद ईसा मसीह 40 दिन बाद तक पृथ्वी पर रहे और उस दौरान उन्होंने अपने शिष्यों को प्रेम एवं करुणा का पाठ पढ़ाया तथा फिर स्वर्ग चले गए।

नए जीवन और जीवन के बदलाव के प्रतीक के रूप में मनाए जाने वाले ईस्टर पर्व को भाईचारे और स्नेह का प्रतीक माना जाता है। कहा जाता है कि इस दिन ईसा मसीह के जीवित होने के बाद उनको यातनाएं देने वाले और सूली पर चढ़ाने वाले लोगों को भी बहुत पश्चाताप हुआ था। ईसाई धर्म की मान्यताओं के अनुसार 'ईस्टर' शब्द की उत्पत्ति 'ईस्त्र' शब्द से हुई थी। यूरोप में प्रचलित पौराणिक कथाओं के अनुसार ईस्त्र वसंत और उर्वरता की एक देवी थी, जिसकी प्रशंसा में अप्रैल माह में उत्सव होते थे। इन उत्सवों के कई अंश यूरोप के ईस्टर उत्सवों में आज भी देखने को मिलते हैं। इसीलिए इसे नवजीवन या ईस्टर महापर्व का नाम दे दिया गया। कुछ देशों में ईस्टर दो दिन तक भी मनाया जाता है और दूसरे दिन को ईस्टर सोमवार कहा जाता है। ईस्टर संडे के दिन ईसाई धर्म के लोग गिरजाघरों में जाकर यीशु को याद करते हैं, उनकी याद में मोमबत्तियां जलाते हैं, बाइबिल पढ़ते हैं और अपने प्रभु यीशु के जीवित होने की खुशी में एक-दूसरे को बधाई देते हैं। ईस्टर रविवार के पहले सभी गिरजाघरों में रात्रि जागरण तथा अन्य धार्मिक परंपराएं पूरी की जाती हैं और असंख्य मोमबत्तियां जलाकर यीशु में अपना विश्वास प्रकट किया जाता है। ईस्टर पर सजी हुई मोमबत्तियां अपने घरों में जलाना तथा मित्रों में बांटना ईसाई धर्म में एक प्रचलित परम्परा है।

ईस्टर के पहले वाले रविवार को 'खजूर रविवार' के नाम से जाना जाता है। इस संबंध में मान्यता है कि इसी रविवार के दिन ईसा मसीह ने यरुशलम में प्रवेश किया था। ईसाई विद्वानों के मतानुसार 29ई. को ईसा मसीह गधे पर सवार होकर यरुशलम पहुंचे थे और वहां के लोगों ने खजूर की डालियों से उनका स्वागत किया था, इसीलिए इस दिन को 'पाम संडे' कहा जाता है। यहीं यरुशलम में उनके खिलाफ षड़यंत्र रचा गया और राजद्रोह के आरोप में शुक्रवार को सूली पर चढ़ा दिया गया। ईसा मसीह को सूली पर लटकाने की घटना को गुड फ्राइडे के नाम से जाना जाता है और इसके तीसरे दिन यानी संडे को ईसा मसीह के दोबारा जीवित होने की घटना को ईस्टर संडे के रूप में मनाया जाता है। ईसाई धर्म में इस घटना को इस बात प्रमाण भी माना जाता है कि सत्य कभी नष्ट नहीं हो सकता। ईस्टर की आराधना उषाकाल में ईसाई महिलाओं द्वारा की जाती है क्योंकि माना जाता है कि यीशु का पुनरूत्थान इसी वक्त हुआ था।

ईसाई धर्म की मान्यताओं के अनुसार जब ईसा मसीह को मृत्युदंड दिया गया तो उनके अनुयायी बहुत निराश और हताश हो गए थे लेकिन गुड फ्राइडे के तीसरे दिन रविवार को मरियम मदीलिनी नामक एक महिला ईसा मसीह की कब्र पर गई, जहां उस समय गहन अंधकार छाया था। महिला ने देखा कि ईसा मसीह की कब्र पर पत्थर नहीं है। उसने इसके बारे में ईसा के अनुयायियों को बताया, जिन्होंने वहां आकर देखा तो कब्र में केवल कफन पड़ा था, ईसा मसीह नहीं थे। कुछ देर बाद वे सभी वहां से चले गए लेकिन महिला वहीं बैठकर रोने लगी। तभी उसने देखा कि कब्र में जहां ईसा मसीह का शव रखा था, वहां दो स्वर्गदूत सफेद कपड़े पहने खड़े थे, एक ईसा मसीह के सिर के पास और दूसरा पैरों के पास। दोनों देवदूतों ने महिला से रोने का कारण पूछा तो उसने बताया कि वे उसके ईसा मसीह को लेकर चले गए हैं। तभी उसने वहां ईसा मसीह को देखा। देवदूतों ने उसे कहा कि वे अब परम पिता के पास जा रहे हैं। इस घटना के तुरंत बाद महिला फिर ईसा के अनुयायियों के पास आई और उनको बताया कि कैसे प्रभु ईसा मसीह पुनः जीवित हो गए हैं। ईसाई मान्यताओं के अनुसार ईसा मसीह पुनः जीवित होने के बाद 40 दिन तक पृथ्वी पर रहे और अंत में वे अपने कुछ शिष्यों के साथ आसमान में चले गए। ईस्टर के दिन ईसाई धर्म के लोग अपने घरों को अंडों से सजाते हैं और एक-दूसरे को अंडे उपहार स्वरूप भी देते हैं। दरअसल ईस्टर पर अंडों का विशेष महत्व है क्योंकि ईसाई धर्म के लोग अंडे को नया जीवन और उमंग का प्रतीक मानते हैं।

(लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

लोकतंत्र : असहमति की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए

प्रियंका सौरभ

दिल्ली विश्वविद्यालय, जिसे भारत के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में गिना जाता है, हाल में एक अजीबोगरीब और प्रतीकात्मक विरोध का केंद्र बना। कुछ छात्रों ने क्लासरूम की दीवारों पर गोबर लीपा और प्रिंसिपल के घर के बाहर भी गोबर फेंक दिया।

यह कोई फिल्मी सीन नहीं था, न ही कोई ग्रामीण उत्सव-यह था एक गुस्से से भरा राजनीतिक वक्तव्य। यह घटना न केवल ध्यान खींचती है, बल्कि कई गहरे और असहज सवाल भी खड़े करती हैः क्या विविद्यालय सिर्फ सत्ता का विस्तार बन चुके हैं? क्या छात्र आंदोलन केवल 'विचारों' से नहीं, अब 'गंध' से भी संवाद करने लगे हैं?

यह विरोध दिल्ली यूनिवर्सटी के साउथ कैम्पस के एक कॉलेज में हुआ जहां छात्रों ने गोबर लीप कर क्लासरूम को 'पवित्र' करने की कोशिश की। दरअसल, 'पवित्रता' का यह तंज था-एक ऐसे सिस्टम पर, जिसे छात्र 'अपवित्र' मानते हैं। कहा गया कि यह विरोध जातिगत भेदभाव, एक दलित प्रोफेसर के साथ अन्याय, और प्रशासन की असंवेदनशीलता के खिलाफ था। छात्रों ने न सिर्फ कक्षाओं को गोबर से लीपा, बल्कि प्रिंसिपल के घर तक जाकर वहां भी प्रदर्शन किया।

भारत में गोबर का उपयोग सदियों से पवित्रता, शुद्धता और स्वदेशी जीवन शैली के प्रतीक के रूप में होता आया है। लेकिन इस मामले में इसका प्रयोग गहराई से व्यंग्यात्मक था। यह ऐसा प्रतीक था जो न केवल सत्ता की 'पवित्रता' को उलट देता है, बल्कि दिखाता है कि छात्र अब विरोध के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर सत्ता की भाषा को उसके ही प्रतीकों से जवाब दे रहे हैं। यह विरोध दरअसल उस छद्म सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर चोट करता है जो गाय, गोबर और गंगा जल को पवित्र मानता है, लेकिन दलित, आदिवासी व वंचित समुदायों की पीड़ा को अपवित्र विषय मानता है।

भारतीय विविद्यालय धीरे-धीरे उस विचारभूमि से हटते जा रहे हैं, जहां असहमति को प्रोत्साहन मिलता था। आज यदि कोई छात्र या प्रोफेसर सत्ता के खिलाफ बोलता है, तो उसे 'राष्ट्रविरोधी', 'गद्दार', या 'विकास-विरोधी' कहा जाने लगता है। कैम्पस अब लोकतांत्रिक संवाद के केंद्र नहीं, बल्कि डर के घेरे बनते जा रहे हैं। छात्रों के इस कदम को केवल 'असभ्यता' कह कर खारिज करना आसान है, लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि यह घटना उस निराशा और हताशा की उपज है जो वर्षों से भीतर ही भीतर सुलग रही है। जब संवाद के सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं, तो प्रतीकात्मक और चौंकाने वाले कदम ही विकल्प बनते हैं।

यह विरोध 'हिंसक' नहीं था, लेकिन 'सुगंधित' भी नहीं था। निश्चित रूप से गोबर से दीवारें लीपना किसी भी संस्थान के लिए अनुशासनहीन हरकत मानी जाएगी। लेकिन यह भी सोचना होगा कि जब छात्र अपनी बात कहने के लिए इतना असामान्य तरीका अपनाते हैं, तो समस्या छात्रों में नहीं, व्यवस्था में भी है। वे किस हद तक खुद को असहाय और अनसुना समझते हैं, यह इस घटना से जाहिर होता है। अलबत्ता, यह विरोध मानसिक और सांस्कृतिक असहजता पैदा करने वाला जरूर था। छात्रों का प्रदर्शन प्रिंसिपल के निजी घर तक पहुंचना न केवल प्रतीकात्मक था, बल्कि दशार्ता है कि छात्रों को अब संस्थागत दायरे में न्याय की उम्मीद नहीं रही। यह खतरनाक संकेत है-न केवल शिक्षा व्यवस्था के लिए, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए भी।

मीडिया ने इस घटना को सनसनीखेज ढंग से दिखाया -'छात्रों ने लीपा गोबर!', 'गाय के नाम पर राजनीति फिर से!'-लेकिन दुर्भाग्यवश किसी ने यह नहीं पूछा कि छात्र ऐसा क्यों कर रहे हैं? किस घटना ने उन्हें इस हद तक पहुंचाया? किसने संवाद के रास्ते बंद किए? मीडिया अक्सर लक्षणों पर बहस करता है, लेकिन बीमारी की जड़ तक नहीं जाता। सत्ता जब गाय और गोबर को संस्कृति का हिस्सा मान कर उन्हें नीतियों में शामिल करती है-जैसे गोबर आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना, पंचगव्य को चिकित्सा बताना-तब वह 'धर्म-सम्मत' होता है।

लेकिन जब यही प्रतीक छात्रों के विरोध में आते हैं, तो वे 'अश्लील' और 'असभ्य' बन जाते हैं। यही सत्ता का दोहरापन है। छात्रों का विरोध सत्ता के इस पाखंड की पोल खोलता है-दिखाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग केवल सत्ता के लिए सुरक्षित नहीं है, बल्कि जनता भी उन्हें विरोध के औजार बना सकती है। इस घटना के बहाने जरूरी हो गया है कि विविद्यालयों में संवाद की संस्कृति को फिर से मजबूत किया जाए। यह घटना प्रतीकात्मक चेतावनी है-शिक्षा का मंदिर यदि सत्ता की चौकी बन जाए, तो छात्र वहीं पर 'शुद्धि यज्ञ' करने लगते हैं। गोबर का यह विरोध हमें याद दिलाता है कि लोकतंत्र में असहमति की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए -वरना दीवारें ही नहीं, सोच भी गंधाने लगती है।

सोना सूख गया

चीन में हुनसेन नाम का राजा शासन करता था। वह बहुत कंजूस था। दान-पुण्य तो दूर, जनता की जरूरतें पूरी करने के लिए भी धन नहीं निकालता था। उसके पास सोने-चांदी का अपार भंडार था, लेकिन वह किसी की मदद नहीं करता था। राजा के महल से कुछ दूरी पर सिनचिन नामक एक वृद्ध की छोटी-सी झोंपड़ी थी। सिनचिन उस समय चीन का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था। राजा की आदतों से वह भी परेशान था। अतः उसने राजा को सबक सिखाने की ठान ली।

एक दिन वह अपने मित्रों से सोने के नन्हे-नन्हे चार टुकड़े उधार लाया। उसने सोने के उन टुकड़ों को पीली चमकती हुई एक बड़ी छलनी में रखा और पास बहती नदी के किनारे जा बैठा। इस नदी पर राजा रोज स्नान करने आता था। सिनचिन ने दूर से ही राजा को आते हुए देखा। वह ऐसा अभिनय करने लगा, मानो छलनी में कुछ छान रहा हो। राजा ने उसके पास आकर पूछा, ‘सिनचिन, यह क्या कर रहे हो? तुम्हें सुबह-सुबह रेत छानने की क्या आवश्यकता पड़ गई?

सिनचिन ने कहा, महाराज, मैं तो इस रेत में छिपा सोना ढूंढ़ रहा हूं।’

राजा कुछ कहता, इससे पहले ही सिनचिन ने छलनी भर रेत निकाली और छान दी। छलनी के ऊपर सोने के चार छोटे-छोटे टुकड़े चमक रहे थे।

राजा ने आश्चर्य से पूछा, ‘रेत में सोना! यह कैसे किया?

सिनचिन ने समझाते हुए जवाब दिया, ‘हुजूर, आज से महीना भर पहले मैंने सोने का एक छोटा सा टुकड़ा इस जगह पर बोया था। देखिए हुजूर, पूरे चार टुकड़े निकले हैं। यदि मैं कुछ और सब्र करता, तो यहां बहुत से टुकड़े मिलते।

राजा ने चौंकते हुए कहा, ‘क्या बकवास करते हो? भला क्या सोने की भी खेती की जा सकती है?

सिनचिन ने कहा, क्यों नहीं हुजूर? आप खुद ही देख लीजिए। मैं तो गरीब आदमी हूं। पिछले दस वर्षों से इसी प्रकार सोना बोता हूं और काट लेता हूं। इसी सोने से मेरा पेट पलता है।

राजा ने नाराजगी भरे स्वर में कहा, तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मेरे पास तो सोने का ढेर है। मुझे पता होता, तो मैं सारा सोना बो देता। आज तक तो मेरा महल सोने से भर गया होता।

इस पर सिनचिन ने कहा, हुजूर, अब भी देर नहीं हुई है। आप अब भी बो लीजिए। छह महीने बाद देखिएगा, तो फसल लहलहाती नजर आएगी।

राजा ने सिनचिन के कंधे पर हाथ रखते हुए जवाब दिया, देखो सिनचिन, तुम तो एक अनुभवी आदमी हो। मेरी ओर से तुम सोने की खेती करो। इसके लिए तुम्हें जितना सोना चाहिए, तुम ले सकते हो। आज ही मेरे साथ महल में चलो। इस काम के लिए तो तुम मेरे सेवकों को भी साथ ले सकते हो।

सिनचिन तो मानो इस मौके की प्रतीक्षा में था। वह तुरंत राजी हो गया। वह महल में गया और सोने के ढेरों टुकड़े ले आया। राजा ने अपने दस सेवक भी सिनचिन को मदद के लिए दे दिए।

देखते ही देखते, नदी के किनारे खुदाई का काम शुरू हो गया। सिनचिन के कहे अनुसार, सेवकों ने वहां पर सोना बीज की तरह बो दिया। ऊपर रेत डाल दी। सिनचिन ने राजा को आश्वासन दिया कि छह महीने बाद बोए हुए सोने का तीन गुना सोना मिल जाएगा।

इस बीच सिनचिन रोज रात को नदी किनारे जाने लगा। वहां पर वह रोज थोड़ा सा हिस्सा खोदता और वहां दबा सोना अपने झोले में रख लाता। अगले दिन सुबह ही वह सारा सोना गरीबों में बांट देता था। धीरे-धीरे जनता की गरीबी मिटने लगी।

इधर राजा इंतजार करता रहा कि कब छह महीने पूरे हों और उसे बोए हुए सोने का तीन गुना सोना मिले। धीरे-धीरे छह महीने भी पूरे हो गए। राजा ने सिनचिन को दरबार में बुलाया। उसे आदेश दिया कि वह सारा सोना खोद लाए। सिनचिन ने इस काम के लिए कुछ सेवकों की मांग की। राजा ने इस बार बीस सेवक उसके साथ कर दिए। सेवकों ने उस स्थान पर काफी गहराई तक खुदाई की, रेत को छाना। लेकिन सभी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गए कि उसमें सिवाय दो-चार सोने के टुकड़ों के कुछ नहीं था। सिनचिन भागा-भागा राजा के पास पहुंचा। रोते हुए बोला, हुजूर, आपकी किस्मत खराब थी। जमीन में सोने के दो-चार सूखे हुए टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं निकला है।

राजा ने आश्चर्य से पूछा, ‘सूखे हुए टुकड़े! तुम्हारा मतलब क्या है? सिनचिन ने जवाब दिया, हां हुजूर, इस बार सारा सोना सूख गया है। आप तो जानते ही हैं, इस बार बारिश बिल्कुल नहीं हुई। सारी फसल सूख गई। आपका बहुत नुकसान हो गया इस बार।

हुनसेन ने डांटते हुए पूछा, भला सोना सूख कैसे सकता है? यह तो ठोस चीज है।

सिनचिन ने मुसकराते हुए कहा, हुजूर, आपने इतनी बातों पर विश्वास कर लिया कि सोना बोया जा सकता है, सोने की फसल लहलहा सकती है, सोना काटा जा सकता है। फिर भला इतनी सी बात पर विश्वास क्यों नहीं करते कि सोना सूख गया?

राजा निरुत्तर हो गया। मंत्रियों से सलाह ली, तो उन्होंने कहा, सिनचिन ठीक कहता है। वाकई यदि सोना बोया जा सकता है, तो सूख भी सकता है। अब तो राजा से कुछ कहते नहीं बना। वह सिर पकड़कर बैठ गया। सिनचिन ने कंजूस राजा को अच्छा सबक सिखा दिया था।

अंतरराष्ट्रीय शोध टीम ने खोजी कछुए की नई प्रजाति

एक अंतरराष्ट्रीय टीम के साथ मिलकर जर्मनी के सेनकेनबर्ग के वैज्ञानिक यूवे फ्रिट्ज ने आनुवांशिक विश्लेषण के आधार पर कछुए की एक नई प्रजाति के बारे में बताया है। अब तक माना जाता था कि 'जीनस चेलुस' कछुए की केवल एक ही प्रजाति है। अध्ययन में कहा गया है कि उन जानवरों की प्रजातियों के संरक्षण का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिनको अक्सर अवैध पशु व्यापार में बेच दिया जाता है। इस अध्ययन को साइंटिफिक पत्रिका मॉलिक्युलर फाइटोलेनेटिक्स एंड इवोल्यूशन में प्रकाशित किया गया है।

इस प्रजाति का नाम माता-माता बताया गया है, जो पानी के नीचे कीचड़ में छिपे रहते है, इनकी लंबाई 53 सेंटीमीटर तक होती है। ये शैवाल से ढकी चट्टानों की तरह दिखते हैं। लेकिन जब कोई शिकार करने लायक जानवर सामने आता है, तो कछुआ उसे अचानक अपना बड़ा मुंह खोलकर उसे चूसकर पूरा निगल जाता है। ड्रेसडेन में सेनकेनबर्ग प्राकृतिक इतिहास संग्रह के प्रोफेसर डॉ.यूवे फ्रिट्ज बताते हैं यद्यपि ये कछुए अपने विचित्र रूप और असामान्य खाने के व्यवहार के कारण व्यापक रूप से जाने जाते हैं, लेकिन उनकी विविधता और आनुवांशिकी के बारे में बहुत कम जानकारी है। फ्रिट्ज कहते हैं अब हमने यह मान लिया कि इस कवचवाले सरीसृप की केवल एक प्रजाति है जो पूरे दक्षिण अमेरिका में व्यापक रूप से फैली हुई है।

लेकिन ऐसी प्रजातियां, जिन्हें लुप्तप्राय नहीं माना जाता है, वे आश्चर्यजनक हो सकती हैं। आनुवंशिक विश्लेषण के आधार पर, उन्हें अक्सर दो या अधिक स्वतंत्र प्रजातियों में विभाजित किया जाता है। कई अध्ययनों से पता लगा है कि माता-माता कछुए अमेजन बेसिन की तुलना में ओरिनोको नदी में अलग दिखते हैं। ड्रेसडेन के वैज्ञानिक कहते हैं इस अवलोकन के आधार पर, हमने इन जानवरों के जेनेटिक बनावट पर बारीकी से नजर रखने का फैसला किया है।

75 डीएनए नमूनों का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने बताया कि पिछली मान्यताओं के विपरीत, माता-माता कछुओं की आनुवंशिक और दिखने में भी भिन्न-भिन्न दो प्रजातियां हैं। नई प्रजातियां चेलुस ओरिनोकेन्सिस ओरिनोको और रियो नीग्रो बेसिन में निवास करती हैं, जबकि चेलुस फिमब्रिआटा के रूप में जानी जाने वाली प्रजाति विशेष रूप से अमेजॅन बेसिन तक सीमित है।

अध्ययन के अनुसार, लगभग 1 करोड़ 30 लाख साल पहले दोनों प्रजातियां मियोसीन के दौरान विभाजित हो गईं थी। इस अवधि के दौरान, पूर्व अमेजॅन-ओरिनोको बेसिन में जानी पहचानी दो नदी घाटियां अलग-अलग हो गई थी। कई जलीय जीवों की प्रजातियां इस तरह स्थान के आधर पर अलग हो गईं और इन्होंने आनुवंशिक रूप से फैलना शुरू कर दिया।

नई प्रजातियों के विवरण में भी माता माता के संरक्षण की स्थिति का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। आज तक, इस प्रजाति के व्यापक रूप से फैलने के कारण इन्हें लुप्तप्राय नहीं माना गया था। अध्ययनकर्ताओं ने कहा कि हमारे परिणाम बताते हैं कि, दो प्रजातियों में विभाजित होने के कारण, प्रत्येक प्रजाति की जनसंख्या आकार पहले की तुलना में छोटी हुई है।

इसके अलावा, हर साल इन विचित्र दिखने वाले हजारों जानवरों का अवैध व्यापार होने से इनका जीवन समाप्त हो रहा हैं।

हालांकि इन जानवरों के अवैध व्यापार का पता लगने पर अधिकारियों द्वारा इन्हें जब्त भी किया जाता है। बोगोटा के नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ कोलम्बिया के प्रोफेसर और प्रमुख अध्ययनकर्ता मारियो वर्गास-रामिरेज कहते है कि इससे पहले बहुत देर हो जाए, हमें इन आकर्षक जानवरों की रक्षा करनी चाहिए।

दुनिया की रहस्यमयी फुन्दूजी झील

दुनिया में लाखों की संख्या में झीलें हैं, कुछ झीलें ऐसा ही जिनका रहस्य आज तक इंसान नहीं जानता.कुछ झीलों काफी डारवनी भी है.आज हम आपको एक ऐसी ही झील के बारे में बताने जा रहे हैं.कहा जाता है कि इस झील का पानी जो भी पी ले वो जिंदा नहीं बचता है और जल्द ही उसकी मौत हो जाती है.यह रहस्यमयी झील दक्षिण अफ्रीका के लिंपोपो प्रांत में है. इसे फुन्दूजी झील के नाम से जाना जाता है.स्थानीय लोगों के अनुसार, किंवदंती है कि इस जगह से प्राचीन काल में एक कोढ़ी व्यक्ति जो कारी लंबा सफर करके यहां आया था, उसे लोगों द्वारा भोजन और आश्रय नहीं दिया गया. कहा जाता है कि इसके बाद उस व्यक्ति ने लोगों को श्राप दिया और झील में प्रवेश किया और फिर गायब हो गया.

कहा जाता है कि झील के अंदर से आज भी डूबे हुए लोगों के रोने, ड्रम बजने की आवाजें आती रहती हैं. स्थानीय लोगों का यह भी कहना है कि पहाड़ों पर मौजूद इस झील की रक्षा एक विशालकाय अजगर करता है.इस अजगर को प्रसन्न करने के लिए हर साल वेन्दा आदिवासी एक नृत्य उत्सव का आयोजन करतें हैं, जिसमें कुवारी लड़कियां नाचती हैं.कहा जाता है कि झील प्राचीन काल में भूस्खलन के कारण बनी थी जिसने मुटाली नदी के प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया था, और अब यह एक रहस्य है कि नदी का पानी बहुत साफ है, लेकिन ऐसा क्या है कि जो भी इसके पानी को पीता है उसकी जल्द ही मृत्यु हो जाती है. जानकारी के अनुसार, झील के पानी के रहस्य को जानने की कई कोशिशें हुईं, हालांकि जांचकर्ता हर बार विफल रहे. कहा गया कि 1946 में एंडी लेविन नाम के एक व्यक्ति को झील के पानी की सच्चाई का पता लगाने के लिए यहां आया था.उसने इस झील से थोड़ा पानी लिया और झील के आस-पास के कुछ पौधे लिए और चल दिया. लेकिन वो थोड़ी देर ही चला था कि वो रास्ता भटक गया.एंडी लेविन तब तक रास्ता भटकते रहे जब तक उन्होंने पानी और पौधे नहीं फेंक दिए थे. हालांकि, इस घटना के कुछ दिनों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई थी.

आज तक किसी को इस बात का पता नहीं चला है कि आखिर इस झील में ऐसा क्या है कि इसका पानी पीने के बाद व्यक्ति कि मौत हो जाती है.कुछ लोगों का मानना है कि इस झील के पानी में कोई खतरनाक जहरीली गैस मिली हो सकती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है.

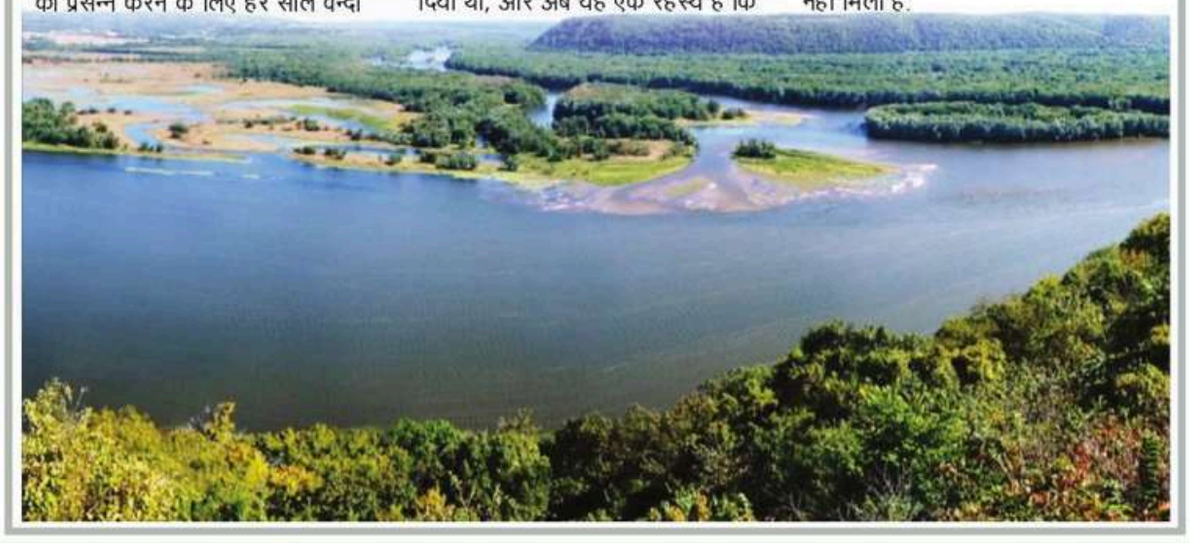

बस्तर में पाई जाने वाली जनजातियां

आधुनिक भारत में आज भी कई ऐसे स्थान है जहा पर बरसों से चली आ रही जनजातियां निवास करती हैयु तो भारतीय इतिहास में आदिवासी जनजाति संस्कृति का बहुत महत्व है.लेकिन समय के साथ बहुत सी जनजातियों ने स्वयं में बदलाव किये है.जैसे हलबा व भतरा जनजाति इत्यादि. अगर संपूर्ण विश्व की बात की जाए तो सबसे ज्यादा जनजातियां भारत में पाई जाती है जैसे कोल, भील, पहाड़िया, कमार, थारू जनजाति इत्यादि. लेकिन आज हम आपको बस्तर में पाई जाने वाली प्राचीन समय से लेकर अब तक चली आ रही जनजातियों के बारे में बताने जा रहे हैं.ये जनजातियां बस्तर व बस्तर के आस पास के इलाको में निवास करती है.तो जानते हैं इन जनजातियो के बारे में

जनजाति का अर्थ

जनजाति को समझने के लिए पहले हमें प्रकृति व जंगलों में रहने वाले मनुष्य के समुदाय को बारीकी से समझना चाहिए.जनजाति वह होती है जो सभी लोगों से दूर पर्वतों,जंगलों, वनो इत्यादि में निवास करती हैं. जिन की भाषा अलग होती है जो भूत-प्रेत, दैवी शक्तियों में बेहद विश्वास रखते हैं. जिन का व्यवसाय जंगली शिकार व जंगली पेड़ पोधो पर निर्भर रहता है. जंगलो में पाई जाने वाली लगभग 90 % जनजातीय असभ्य व हिंसक होती हैजिस प्रकार जंगली जानवर अपने इलाके की रक्षा के लिए अपनी जान तक दे सकता है ठीक इसी प्रकार ये जनजातीया अपने इलाके की रक्षा करती है. अमूमन सभी जनजाती माँसाहारी होती है.

बस्तर में पाई जाने वाली जनजातियों से पहले आपको बस्तर इलाके के बारे में समझना होगा.बस्तर एक जिला है जो चार संस्कृतियों से घिरा हुआ है इसके चारों तरफ छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और महाराष्ट्र की सीमाएं लगती है.इस जिले के जंगलो में हजारों सालों से विभिन्न जनजातियाँ निवास करती हैं जिनमे से प्रमुख जनजातियों का विवरण इस प्रकार है :

माडिया जनजाति

माडिया जनजाति बस्तर के जंगलों में पाई जाने वाली जनजाति है.यह जनजाति बस्तर के पहाड़ी इलाकों व जंगलों में निवास करती है.माडिया जनजाति को दो भागों में बांटा गया है 1.अबुझ माड़िया 2. दण्डामी माड़िया (बाईसन होर्न माड़िया) अबूझ मडिया पहाड़ों के घने जंगलों में निवास करती है व दण्डामी माड़िया समतल इलाके के जंगलों में निवास करती हैये लोग माड़िया भाषा बोलते है.इन दोनों जनजातियों की संस्कृति आपस में मिलती जुलती है और यह दोनों ही जनजातियां बाहरी लोगों का अपने इलाके में आना पसंद नहीं करती.जब भी कोई व्यक्ति इनके इलाके में प्रवेश करता है तो यह असहज महसूस करते हैं व बाहरी व्यक्ति पर तीर कमान से हमला कर देते हैं. हमले के बाद इस जनजाति के लोग कर्कश ध्वनि के द्वारा अपनी ताकत का एहसास कराते हैं.माडिया जनजाति के पुरुषों का स्वभाव नटखट व नाच गाने वाला होता है.यह लोग शराब के शौकीन होते हैं.इस जनजाति लोग अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए अपने देवताओं के सम्मान में लकड़ियों के द्वारा आग जला कर उसके चारों ओर नृत्य करते हैं.माडिया जनजाति सर्वाहारी जनजातियों की श्रेणी में आती है.इस जनजाति के लोग बहुत बहादुर होते है ।इस जनजाति के पुरुष शिकार के लिए बाघ, भालू, तेंदवे से भी लोहा लेने से नहीं कतराते.यु तो माडिया जनजाति बाघ का बेहद सम्मान करती है परंतु जब बाघ इन पर हमला करता है तो आत्म रक्षा में बाघ को भी मार सकते है.माड़िया लोगो में घोटुल परंपरा का पालन होता है व यह लोग काकसार नाम के कुल देवता की अराधना करते हैं.

हलबा जनजाति

हलबा जनजाति छत्तीसगढ़ (बस्तर) में पाई जाने वाली एक विशाल जनजाति है इस जनजाति के लोग छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के इलाकों में निवास करते हैं. प्राचीन समय में यह जनजाति भी जंगलों में रहती थी परंतु आज के समय में इस जनजाति के लोग गांवो की तरफ भी पलायन कर रहे हैं.हलबा जनजाति 17 वीं शताब्दी में बस्तर राज्य के प्रमुख और सबसे प्रभावशाली जनजातीय समूहों में से एक थीं व उस समय हलबा जनजाति बस्तर राज्य की राजनीति और सेना में सक्रिय थीं.देश के विभिन्न हिस्सों में प्रवास के बाद हलबा जनजाति ने अपनी आजीविका के लिए अलग-अलग व्यवसाय को अपना लिया . जैसे कृषि, बुनाई, मजदूरी इत्यादि हल्बा जनजाति की भाषा हल्बी है, जो मराठी और ओडिया का संयोजन से बनी है व ये लोग देवी माँ दंतेश्वरी की पूजा करते है.

भतरा जनजाति

भतरा जनजाति प्राचीन काल में सम्पूर्ण बस्तर जिले में फैली हुई थी इस जनजाति के लोग कला और नाटक प्रेमी होते थे.इन्हें पेंटिंग करना व नाच गाना पसंद था.परंतु समय के साथ इस जनजाति के लोगो ने खुद में बदलाव किया और यह भी समय की दौड़ के साथ चलना सिख गए.आज भतरा जनजाति के लोगों ने आधुनिक बनना शुरू कर दिया है.इस जनजाति के लोग आज कल शहरों में रोजगार की लिए निवास करते हैं.प्राचीन समय में इस जनजाति के लोगो का प्रिय भोजन केकड़ा व पक्षियों का मॉस था.

मुरिया जनजाति

मुरिया जनजाति को बस्तर की मूल जनजाति कहा जाता है अर्थात इस जनजाति के लोग हमेशा से इस इलाके में रहे हैं इस जनजाति के लोगों को श्रृंगार करना व कलात्मक वस्तुएं बनाना पसंद है.मुरिया जनजाति में माओपाटा के रूप में एक आदिम शिकार नृत्य किया जाता है जिसमे इस जनजाति के सभी पुरुष बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते है.नृत्य के समय युवा पुरुष नर्तक अपनी कमर में पीतल अथवा लोहे की घंटियां बांधे रहते है साथ में छतरी और सिर पर आकर्षक सजावट कर नृत्य करते है.

हजारों ख्वाहिशें ऐसी के 20 साल पूरे

सुधीर मिश्रा की फिल्म हजारों ख्वाहिशें ऐसी के बुधवार को रिलीज होने के 20 साल पूरे हो गए। अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह ने पुरानी यादों को ताजा करते हुए बताया कि इस फिल्म ने उन्हें सिनेमा की दुनिया से परिचित कराया था। सेट पर अपने पहले दिन को याद करते हुए, चित्रांगदा ने एक दिल छू लेने वाला वाकया शेयर किया। उन्होंने कहा, पहली बार मैंने एक सही मूवी कैमरा देखा था, वो भी शूटिंग के अपने पहले दिन। यह वह सीन था, जहां केके का किरदार गेस्ट हाउस में गीता से मिलने आता है। यह एक भावनात्मक क्षण था, जिसे लेकर मैं घबराई हुई थी। मैं उस एहसास को कभी नहीं भूल सकती। मुझे लगता है कि मैंने दो या तीन टेक में शॉट ओके कर दिया। सुधीर मिश्रा ने बस इतना ही कहा, चित्रांगदा, फिल्मों में आपका स्वागत है। मुझे आज भी वह दिन बहुत स्पष्ट रूप से याद है। सुधीर मिश्रा के निर्देशन में बनी, हजारों ख्वाहिशें ऐसी एक कल्ट क्लासिक बन गई, जिसे इसकी कहानी और मजबूत अभिनय के लिए सराहा गया। गीता के रूप में चित्रांगदा के चित्रण ने एक स्थायी छाप छोड़ी और दो दशक बाद भी इसकी सफलता का जश्न मनाया गया। भारतीय इमरजेंसी की पृष्ठभूमि पर आधारित, हजारों ख्वाहिशें ऐसी 1970 के दशक के तीन युवाओं के इर्द-गिर्द घूमती है, जब भारत बड़े पैमाने पर सामाजिक और राजनीतिक बदलावों से गुजर रहा था। फिल्म का टाइटल उर्दू शायर मिर्जा गालिब के शेर से लिया गया है। चित्रांगदा अपनी पहली फिल्म में केके मेनन और शाइनी आहूजा के साथ नजर आई थीं। हाल ही में, चित्रांगदा को नेटफ्लिक्स सीरीज खाकी- द बंगाल चैप्टर में देखा गया था, जिसमें वह निबेदिता बसाक की भूमिका निभा रही हैं। इसके बाद, वह अक्षय कुमार के साथ बहुप्रतीक्षित सीक्वल हाउसफुल 5 में नजर आएंगी। इसमें चित्रांगदा के साथ रितेश देशमुख, संजय दत्त, फरदीन खान, नाना पाटेकर, जैकी श्रॉफ, डिनो मोरिया, जैकलीन फर्नांडीज, नरगिस फाखरी, सोनम बाजवा, सौंदर्या शर्मा और चंकी पांडे जैसे एक्टर्स मुख्य भूमिकाओं में हैं। नाडियाडवाला ग्रैंडसन एंटरटेनमेंट बैनर के तहत साजिद नाडियाडवाला ने हाउसफुल 5 का निर्माण किया है।

पीरियड्स के बारे में अभी भी शर्म और संकोच के साथ की जाती है बात: सामंथा

अपनी बेबाकी के लिए मशहूर अभिनेत्री सामंथा रूथ प्रभु ने पीरियड्स के बारे में खुलकर बात की। न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बातचीत में उन्होंने कहा कि पीरियड्स के बारे में बातचीत अभी भी शर्म, फुसफुसाहट और संकोच के साथ की जाती है। सामंथा ने बताया, हम महिलाओं ने बहुत तरक्की कर ली है, बहुत आगे आ गए हैं। फिर भी पीरियड्स के बारे में बात करने की बारी आती है तो अभी भी चुप्पी, फुसफुसाहट और शर्म, संकोच के साथ बात की जाती है। अभिनेत्री ने अपने पॉडकास्ट टेक20 के एक एपिसोड में न्यूट्रिशनिस्ट राशि चौधरी से पीरियड्स, साइकिल सिंकिंग, एंडोमेट्रियोसिस और महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं पर बात की। उन्होंने बताया, राशि चौधरी से बात करके मुझे याद पता चला कि इन पुरानी धारणाओं को तोड़ना कितना महत्वपूर्ण है। हमारे साइकल मजबूत हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे जीवन को पुष्ट करते हैं। यह ऐसा कुछ नहीं है जिस पर शर्मिंदा होना चाहिए या छिपाना चाहिए या, उस मामले को हल्के में नहीं लेना चाहिए। पॉडकास्ट के एक एपिसोड में सामंथा ने अपने शरीर, अपने रिश्ते, एंडोमेट्रियोसिस जैसी दुर्बल करने वाली बीमारी और एक महिला होने के नाते आने वाली चुनौतियों के बारे में खुलकर बात की। पॉडकास्ट में सामंथा ने कहा, पीरियड्स साइकल हमारे मन और शरीर को कैसे प्रभावित करता है, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें हर गुजरते साल के साथ लगातार सीखते रहना चाहिए। राशि, अपने अनुभव और अपने ज्ञान की गहराई के साथ चीजों को समझाने का एक बहुत ही स्पष्ट तरीका रखती हैं और मुझे खुशी है कि हम साथ मिलकर इस तरह की अच्छी बातचीत कर पाए जो सही मायने में समझने के लिए जरूरी है। फिल्मों की बात करें तो, सामंथा अपकमिंग फिल्म शुभम के साथ निर्माता की दुनिया में कदम रख चुकी हैं। सामंथा ने 7 अप्रैल को अपने पहले प्रोडक्शन का टीजर शेयर किया था। उन्होंने लिखा, हमारे प्यार से किया गया छोटा सा काम आपके सामने पेश है। बड़े सपनों वाली एक छोटी सी टीम! हमने इस यात्रा और साथ मिलकर जो कुछ भी बनाया है, उसके लिए अविश्वसनीय रूप से आभारी हैं। हम आशा करते हैं कि आपको हमारी फिल्म पसंद आएगी।

दिल खोलकर की कंटेंट की तारीफ

अर्जुन कपूर हैं TVF के जबरदस्त फैन

आज के दौर के सबसे पसंदीदा कंटेंट बनाने वालों में से एक है। उन्होंने अपने मजेदार और दिल से जुड़े शो के जरिए लोगों के दिलों में खास जगह बना ली है। ऊडूस्र वो नाम है जो ऑडियंस की सोच और पसंद को बखूबी समझता है, और शायद यही वजह है कि उनके शो आज की पीढ़ी के पॉप कल्चर का अहम हिस्सा बन चुके हैं। जहां एक तरफ ऊडूस्र और उनकी कहानी कहने की स्टाइल को चारों तरफ सराहा गया है, वहीं एक्टर अर्जुन कपूर भी टीवीएफ और उनके शोज़ की तारीफ करते नज़र आए। अर्जुन कपूर खुद TVF के बड़े फैन लगते हैं। हाल ही के एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि उन्हें TVF एस्पिरेंट्स बेहद पसंद है और वो शो के एक्टर्स से मिल भी चुके हैं। अर्जुन ने आगे कहा, वो लोग हर वक्त अपनी मार्केटिंग नहीं करते, शायद इसीलिए हमें ये एहसास नहीं होता कि उन्होंने इतने जबरदस्त शोज़ बनाए हैं। अर्जुन कपूर ने TVF पिचर्स के लिए भी अपनी पसंद जाहिर की। उन्होंने कहा कि ये लोग अपनी असली जिंदगी के तजुर्बों से कहानियाँ गढ़ते हैं, और शायद यही वजह है कि इनके शोज़ इतने एंटरटेनिंग होते हैं। अर्जुन ने ये भी कहा कि जब आपकी पहचान इतनी गहराई से जुड़ी हुई होती है, तो आपकी कहानी में एक अलग ही सच्चाई और असर दिखता है। ये वाकई में इस बात का सबूत है कि TVF किस तरह से आम लोगों के बीच अपनी मजबूत पकड़ बना चुका है। लगातार एक से बढ़कर एक हिट शो देने के बाद, TVF ने हाल ही में पंचायत, कोटा फैक्ट्री और गुल्लक जैसी अपनी सबसे पॉपुलर सीरीज की नई इंस्टॉलमेंट्स रिलीज़ कीं, जिन्हें दर्शकों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला। सिर्फ इतना ही नहीं, टीवीएफ ने कई अवॉर्ड शोज़ में भी धूम मचाई और कई बड़े अवार्ड्स अपने नाम किए, जिससे ये साफ हो गया कि इंडस्ट्री में उनकी पकड़ अब और भी मज़बूत हो चुकी है। IIFA डिजिटल अवॉर्ड्स 2025 में ऊडूस्र ने सभी बड़े अवॉर्ड्स पर कब्जा जमाते हुए जबरदस्त बाज़ी मारी। पंचायत सीज़न 3 को बेस्ट सीरीज़ का अवॉर्ड मिला, वहीं इसके डायरेक्टर दीपक कुमार मिश्रा को बेस्ट डायरेक्टर का सम्मान मिला। लीड रोल में जितेंद्र कुमार को पंचायत सीज़न 3 के लिए बेस्ट परफॉर्मेंस (मेल) का अवॉर्ड मिला, जबकि फैसल मलिक को सपोर्टिंग रोल (मेल) के लिए सम्मानित किया गया। इसके अलावा कोटा फैक्ट्री सीज़न 3 को बेस्ट स्टोरी (ओरिजिनल) इन अ सीरीज़ का अवॉर्ड मिला।

'नो एंट्री' के सीक्वल में हुई इस हसीना की एंट्री

वरुण धवन-दिलजीत भी आएंगे नजर

कई ऐसी यादगार फिल्में हैं जिनके अगले भाग का दर्शक बेसब्री से इंतजार करते रहते हैं। ऐसी ही एक फिल्म है नो एंट्री, जिसके सीक्वल का दर्शक काफी लंबे वक्त से इंतजार कर रहे हैं। अब फिल्म बनने जा रही है और इसमें बॉलीवुड की इस दीवा की भी एंट्री हो गई है।

बॉलीवुड की यादगार कॉमेडी फिल्मों में शुमार 'नो एंट्री' का अब अगला भाग बनने की तैयारी में है। पिछले काफी वक्त से फैंस 'नो एंट्री' के सीक्वल का इंतजार कर रहे थे, लेकिन अब अंततः ये होने जा रहा है। फिल्म को लेकर अब लगातार नई-नई जानकारियां भी सामने आ रही हैं। अब मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से एक और खबर सामने आ रही है कि 'नो एंट्री 2' में बॉलीवुड की इस खूबसूरत हसीना की भी एंट्री हो गई है।

कॉमेडी में तमन्ना की वापसी

'नो एंट्री 2' में अब इंडस्ट्री के बड़े सितारों की एंट्री हो रही है। पीपिंग मून की एक रिपोर्ट के मुताबिक, अब 'नो एंट्री 2' में बॉलीवुड एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया की भी एंट्री हो गई है। तमन्ना फिल्म में प्रमुख किरदार में नजर आ सकती हैं। इन रिपोर्ट्स की मानें तो यह तमन्ना की कॉमेडी में वापसी का प्रतीक है और वह इसे लेकर काफी उत्साहित हैं।

आदिति राव हैदरी के नाम की भी है चर्चा

मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसी चर्चाएं भी हैं कि फिल्म में तमन्ना के अलावा आदिति राव हैदरी भी एक और फीमेल लीड के तौर पर नजर आएंगी।

हालांकि, अभी इसकी कोई पुष्टि नहीं हुई है। लेकिन तमन्ना और अदिति को लेकर मीडिया में चर्चाओं का बाजार गर्म है।

पूरी नई कास्ट की होगी एंट्री

'नो एंट्री 2' की स्टारकास्ट की बात करें तो फिल्म में वरुण धवन, अर्जुन कपूर और दिलजीत दोसांझ मुख्य भूमिका में होंगे। इस तिकड़ी को एक प्रॉपर कॉमेडी फिल्म में एकसाथ देखने के लिए दर्शक काफी उत्साहित हैं। हालांकि, लोगों को उम्मीद थी कि 'नो एंट्री 2' में साल 2005 में आई 'नो एंट्री' की ही असली कास्ट वापस आएगी। जिसमें सलमान खान, फरदीन खान और अनिल कपूर प्रमुख भूमिकाओं में थे। हालांकि, अब ऐसा लगता है कि फिल्म में नई कास्ट ही नजर आएगी।

क्या नवाजुद्दीन पकड़ पाएंगे 1500 किलो सोना या मिलेगी मौत की सजा?

नवाजुद्दीन की आगामी फिल्म कोस्टाओ का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। यह फिल्म 1990 के दशक के गोवा के एक निडर कस्टम अधिकारी की दिलचस्प कहानी है। फैंस काफी समय से नवाज की फिल्म का इंतजार कर रहे थे। ट्रेलर के साथ निर्माताओं ने इसके प्रीमियर की डेट की भी घोषणा की है।क्या है ट्रेलर में? निर्माताओं द्वारा जारी किए गए ट्रेलर में नवाजुद्दीन एक जिद्दी कस्टम ऑफिसर की भूमिका में नजर आए हैं, जो आजाद भारत में सोने की सबसे बड़ी स्मगलिंग का खुलासा करना चाहते हैं। इस रैकेट में बहुत शक्तिशाली लोग शामिल हैं। अंदर के लोगों की मिलीभगत के चलते वह खुद जाल में फंस जाते हैं। उनके ऊपर हत्या का आरोप लग जाता है। इस बीच उनका परिवार भी कठिनाइयों का सामना करता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं निजी जीवन की अफवाहें: एआर रहमान

म्यूजिक कंपोजर, सिंगर एआर रहमान, अपने म्यूजिक कंसर्ट 'वंडरमेंट' की तैयारी में व्यस्त हैं। इस बीच, उन्होंने समाचार एजेंसी आईएएनएस के साथ बात की। इस दौरान, उन्होंने बताया कि निजी जिंदगी से जुड़ी अफवाहें मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं। इंटरव्यू में एआर रहमान ने वंडरमेंट टूर की तैयारी, संगीत में एआई के इस्तेमाल, अफवाहों और मानसिक स्थिति पर पड़ने वाले असर को लेकर खुलकर बात की। जब उनसे पूछा गया कि, संगीत के लिए मन की प्रसन्नता की आवश्यकता होती है, तो क्या आपके बारे में चलने वाली खबरें और अफवाहें आपको प्रभावित करती हैं? रहमान ने जवाब दिया, मुझे लगता है कि अफवाहें असर डालती हैं और हर कलाकार इस स्थिति से गुजरता है। अफवाहें मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं। परिस्थिति में फंसे होने की वजह से वे दुखी और प्रभावित होते हैं और उस स्थिति में भी उन्हें काम करना पड़ता है। उस स्थिति में भी उन्हें छैया छैया या हम्मा हम्मा जैसे गाने करने पड़ते हैं। गायक हो या कोई और उस स्थिति में आप एक अभिनेता की तरह बन जाते जाते हैं। आप अंदर से भले ही दुखी होते हैं, लेकिन आपको दिखाना होता है कि आप खुश हैं। रहमान से पूछा गया कि जब उनके बारे में कुछ अफवाहें सामने आती हैं तो उन्हें कैसा लगता है? इस पर उन्होंने हल्के अंदाज में कहा, ऐसी बातों से असर पड़ता है, लेकिन मेरा मानना है कि यह जिंदगी का एक हिस्सा है। उतार-चढ़ाव जिंदगी में बने रहते हैं। एआर रहमान को लेकर सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हुआ था, जिसमें सामने आया था कि रहमान बैंड की गिटारिस्ट रहीं मोहिनी डे के साथ रिलेशन में हैं। इस अफवाह से व्यथित रहमान ने एक बयान जारी किया था

बेहतरीन अभिनेता हैं रणबीर कपूर: इमरान हाशमी

अभिनेता इमरान हाशमी की फिल्म 'ग्राउंड जीरो' सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। इस बीच इमरान हाशमी ने न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बात की। उन्होंने बॉलीवुड में उभरती प्रतिभाओं के बारे में खुलकर बात की और रणबीर कपूर को उनकी जनरेशन का बेस्ट स्टार बताया। उन्हें मौजूदा पीढ़ी के बेहतरीन अभिनेताओं में से एक बताते हुए हाशमी ने 'एनिमल' में रणबीर के अभिनय की तारीफ की।

रणबीर की अभिनय क्षमता की तारीफ करते हुए इमरान ने कहा, मैं सोशल मीडिया ट्रोलिंग पर ज्यादा टिप्पणी नहीं करूंगा- यह शोर से भरा एक इको चैंबर है। इसे गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए। लेकिन रणबीर कपूर एक ऐसे अभिनेता हैं, जिनकी मैं वाकई प्रशंसा करता हूं। मुझे एनिमल में उनका अभिनय पसंद आया। कई युवा अभिनेता बेहतरीन काम कर रहे हैं और स्क्रीन पर नए नजरिए को ला रहे हैं। संदीप रेड्डी वांगा की एक्शन-थ्रिलर में रणबीर ने रणविजय सिंह की भूमिका निभाई, जो अपने पिता की रक्षा के लिए चट्टान की तरह खड़ा रहता है। जब उसके पिता की हत्या का प्रयास किया जाता है तो दुश्मनों से लड़ने के लिए वह आगे आता है। इस फिल्म में रणबीर कपूर के साथ अभिनेता बॉबी देओल, रश्मिका मंदाना, तृप्ति डिमरी और अनिल कपूर भी अहम भूमिकाओं में हैं। इमरान के लेटेस्ट प्रोजेक्ट ग्राउंड जीरो की बात करें तो, फिल्म में वह बीएसएफ कमांडेंट नरेंद्र नाथ धर दुबे की भूमिका निभाते हुए दिखाई देंगे, जिन्होंने गाजी बाबा को मारने के लिए ऑपरेशन को लीड किया था। इस मिशन को पिछले 50 वर्षों में बीएसएफ के बेस्ट ऑपरेशन के रूप में जाना जाता है। फिल्म ग्राउंड जीरो में दुबे की भूमिका को लेकर इमरान हाशमी ने बताया, जब कोई अभिनेता इस तरह की भूमिका निभाता है, तो हमेशा एक शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक पहलू शामिल होता है। शारीरिक रूप से मुझे एक अनुशासित बॉडी लैंग्वेज अपनानी पड़ी। जब आप एक कमांडिंग ऑफिसर की भूमिका निभा रहे होते हैं, तो व्यवहार महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने कहा, मुझे अपने शरीर पर भी काम करना पड़ा- वेट ट्रेनिंग, आहार में बदलाव, कैलोरी में वृद्धि- उनकी जनरेशन के बेस्ट स्टार भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से, मैंने बीएसएफ अधिकारियों से बात की और उनके हाव भाव को समझने की कोशिश की, ताकि मैं ऑपरेशन के दौरान उनकी मानसिक स्थिति, उनके परिवार की स्थिति और इस तरह के हाई रिस्क वाले पेशे से होने वाले भावनात्मक तनाव को समझ सकूं।

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक सम्पादक कृष्णा टेकड़ीवाल द्वारा डिजिटल अखबार कंकड़बाग पटना से प्रकाशित। समाचार पत्र में किसी भी समाचार व लेख-आलेख पर सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्याय क्षेत्र पटना ही रहेगा। मोबाइल- 9801716267